मैथिल ब्राह्मण सन्देश

मैथिल ब्राह्मणों की प्रमुख सामाजिक मासिक पत्रिका

जनवरी-2020

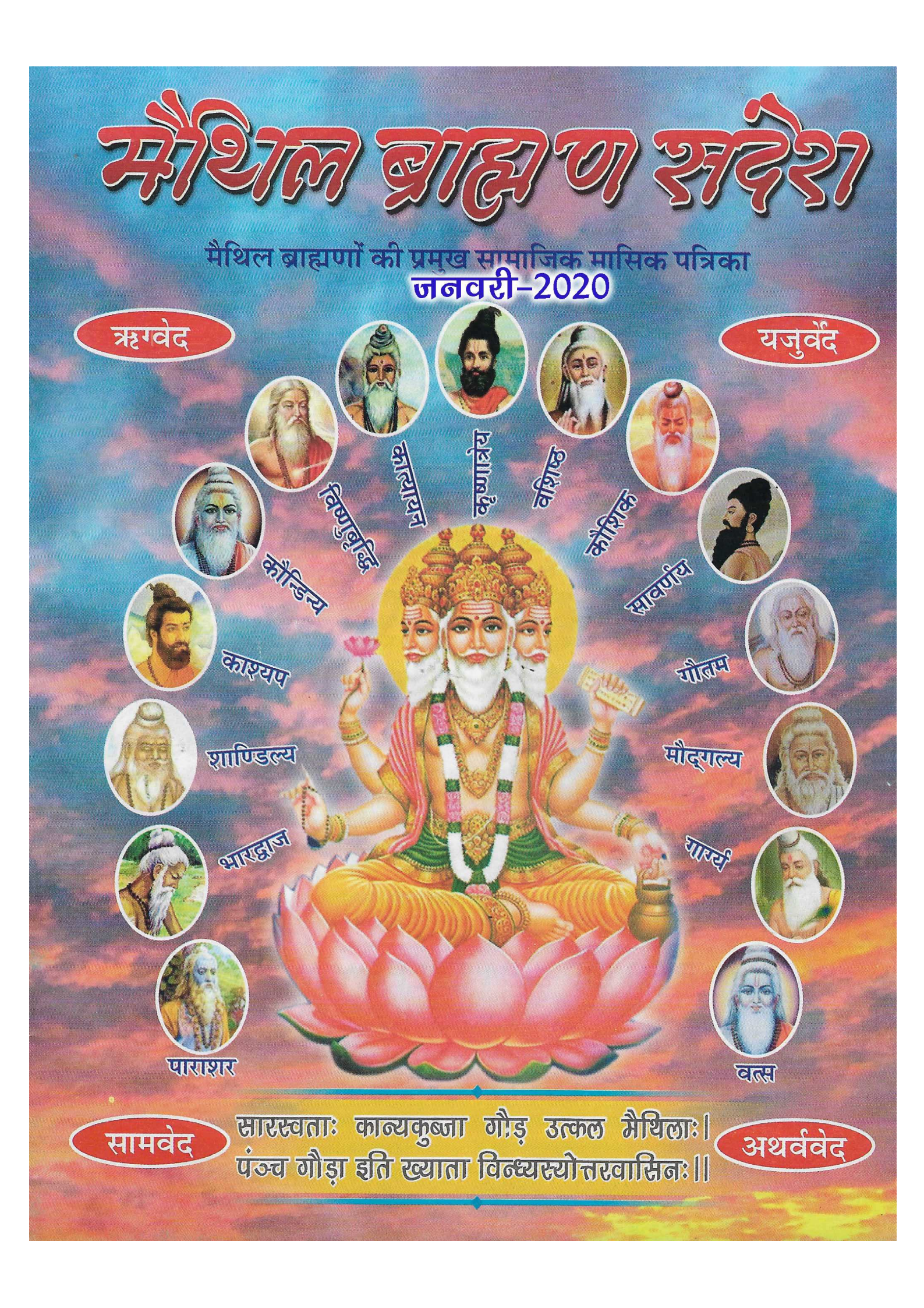

सारस्वताः कान्यकुब्जा गौड़ उत्कल मैथिलाः।
पंञ्च गौड़ा इति ख्याता विन्ध्यस्योत्तरवासिनः॥

मैथिल ब्राह्मण संदेश

बृजस्थ मैथिल ब्राह्मणों की प्रमुख मासिक पत्रिका

कार्यालयः गली नं0 4, ज्वालापुरी, अलीगढ़–202001 (उ0प्र0)मोबाईल नं0:9760689055

Whatsapp: 9259647216 (मैथिल ब्राह्मण संदेश ग्रुप), email: mbmaligarh2019@gmail.com

वर्ष–8, अंक–78, www.maithilbrahminmahasabha.in जनवरी–2020

संरक्षक

1. रघुवीर सहाय शर्मा''मैथिलेन्दु''एम0ए0बी0एड0 साहित्य रत्न राष्ट्रीय संयोजक, राष्ट्रीय ब्राह्मण महासभा मो:8077033429
2. श्रीमती गायत्री देवी शर्मा, अलीगढ़ मो:9058532152
3. डॉ0 रामवीर शर्मा, आगरा एम0ए0,पी–एच0डी0 मो:8445703377
4. रमेश चन्द्र शर्मा, दिल्ली, मो:9312942251
5. सत्यप्रकाश शर्मा, आगरा, मो:9219636927

प्रधान सम्पादक

1. जयप्रकाश शर्मा, अलीगढ़, मो: 6395577830
   एम0एस–सी0 (वाटनी), एम0ए0(राज0), पूर्व प्रधानाचार्य

कार्यकारी प्रधान सम्पादक

1. डॉ0 मोर मुकुट शर्मा, अलीगढ़, मो: 9997579211
   एम0ए0 (हिन्दी), एल–एल0बी0, पी–एच0डी0

प्रबन्ध सम्पादक

1. चन्द्रदत्त वैद्य, आयुर्वेदाचार्य, मो: 9760689055
   स्वर्ण पदक प्राप्त (पंचगव्य चिकित्सा) (अलीगढ़)

सम्पादक मण्डल

1. रमेश चन्द्र शर्मा (झाँसी) मो: 9936526677
2. राजेन्द्र प्रसाद शास्त्री (आगरा) मो: 9760746099
3. के0एस0 शर्मा (मथुरा), मो: 8630285841
4. पं0 पूरन चन्द्र शास्त्री (अलीगढ़) मो:9412442343
5. डा0 उपेन्द्र झा ''मैथिल''(हाथरस) मो: 9837484645
6. कोमल प्रसाद शर्मा, (बिसावर) मो: 9719247433
7. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा (फरीदाबाद) मो: 9810195234
8. हरीशंकर मिश्र (फिरोजाबाद) मो: 9927383141
9. अशर्फी लाल शर्मा (अवागढ़) मो: 6396959575
10. किशोर मिश्रा (दिल्ली) मो: 9811563927
11. पी0के0 शर्मा (शाहदरा दिल्ली) मो: 9350802307

मुद्रक एवं प्रकाशक

स्वामी मैथिल ब्राह्मण सेवा–शिक्षा–संस्कार ट्रस्ट अलीगढ़ की ओर से प्रकाशक एवं सम्पादक जयप्रकाश शर्मा, 1/567–एच, गंगा बिहार, सुरेन्द्र नगर, अलीगढ़ द्वारा लिथो कलर प्रैस, अचल तालाब, जी0टी0 रोड, अलीगढ़ से मुद्रित एवं प्रकाशित।

कम्प्यूटर ग्राफिक्स– राहुल मिश्रा, अलीगढ़

यदि समाज को ऊपर उठाना है तो पहले उसे संगठित करें।

– अनुक्रमणिका –

क्रम	पेज नं.
1. मिथिला वन्दना	2
2. सम्पादकीय	3
3. मैथिल ब्राह्मण कब? कहाँ? कैसे?	4
4. मैथिल ब्राह्मणों के खेड़ों की उत्पत्ति	6
5. स्वामी ब्रह्मनन्द सरस्वती	7
6. समाज में जागरण की आवश्यकता	8
7. रत्न धारण द्वारा भाग्य निर्माण	9
8. हम दीर्घजीवी कैसे हों	11
9. सच्चा गुरू	14
10.रूद्राक्ष का महत्व	16
11.हिन्दुओं का महत्वपूर्ण तीर्थ नैमिषारण्य	18
12.स्मार्टफोन बच्चों के लिए कितना...	22
13.सोरायसिस की सफल चिकित्सा	24
14.इम्तहान	25
15.आंवले का अचार	26
16. स्वास्थ्य प्रश्नोत्तरी	27
17. मैथिल ब्रा.स. वार्षिक सदस्य	28
18. मैथिल ब्रा.स.पत्रिका वितरण	29
19. वर कन्या सूची	30
20. विवाह विवरण फॉर्म	32

वंदना

शारदा शरदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे।
सर्वदा सर्वदासमाकमं सन्निधं सन्निधं क्रियात।।
सरस्वती च तां नौमि वागधिष्ठातृदेवतां।
देवत्व प्रतिपद्यन्ते यदनुग्रहतो जनाः।।

–:मिथिला वंदना:–

नित्यस्थलि नित्यलीले नित्यसधाम नमोअस्तु ते।
धन्या त्वं मिथिले देवि ज्ञानदे मुक्तिदायिनि।।
राम स्वरूपे वैदेहि सीताजन्मप्रदायिनि।
पापविध्वंसिके मातार्भवन्धविमोचनि।।
यज्ञदानतपोध्यानस्वाध्यायफलदे शुभे।
कामिनां कामदे तुभ्यं नमस्यामों वयं वदा।।

–:पत्रिका सम्बन्धी नियम:–

- पत्रिका की एक प्रति का शुल्क 10/–रू, वार्षिक शुल्क 120/–, आजीवन शुल्क 2100/– है। 2500/– (एक या दो बार में) देकर पत्रिका के संरक्षक सदस्य बन सकते हैं।
- पत्रिका के विविध स्तम्भों में सहयोग करने के अतिरिक्त सम्पादक मण्डल के सदस्यों को अपने क्षेत्र में पत्रिका के कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है।
- व्यक्तिगत अथवा किसी संगठन सम्बन्धी आलोचनात्मक लेख नहीं छापे जा सकेंगे। केवल रचनात्मक, सकारात्मक एवं समाजोत्थान सम्बन्धी लेख ही छापे जायेंगे।
- जो लेख नहीं छापे जा सकेंगे, उनको लौटाने की जिम्मेदारी सम्पादक मण्डल की नहीं होगी। लेखक की राय सम्पादक मण्डल की राय से मिलना आवश्यक नहीं है।
- पत्रिका के सम्बन्ध में सुझाव एवं समीक्षा सादर आमंत्रित हैं।
- पत्रिका में विज्ञापन के लिये कवर पेज चार कलर में तीन माह के लिए 2 हजार रूपये तथा अन्दर का आधा पेज एक माह के लिए 500/– देय होगा।
- वर–कन्या की सूचियाँ एवं लेख कार्यालय के पते पर स्वीकार किये जायेंगे।
- पत्रिका में प्रकाशित लेख–लेखक के अपने व्यक्तिगत विचार होते हैं। पत्रिका के सम्पादक मण्डल का उन विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- आप अपने लेख (स्वास्थय सम्बन्धी, विवाह सम्बन्धी, सवाल–जबाब, समाज से सम्बन्धित लेख, कहानी इत्यादि) हमें व्हॉटसअप, ईमेल भी कर सकते हैं।

Whatsapp: 9259647216 (मैथिल ब्राह्मण संदेश ग्रुप), email:mbmaligarh2019@gmail.com

संपादकीय

''अतीत को विस्मृति करो, भविष्य के प्रति आशावादी बनो और वर्तमान में विद्या, धन, नैतिकता अर्जित करो, ये प्रसन्नता का मूलमंत्र है''।

हम जगत् जननी सीता माँ की जन्मस्थली मिथिला के निवासी हैं, जहाँ शास्त्रार्थ में शकंराचार्य पराजित हुए और जहाँ का पाण्डित्य विश्वविख्यात् रहा। जब मिथिला के अनेक विद्वानों का आगमन काशी में हुआ तो विश्व में 'काशी की पाण्डित्य परम्परा विख्यात् हो गई। फिर क्या कारण है कि जो मैथिल पंडित ब्रज में प्रवासी हुए। उनकी विद्वता से 'ब्रज की पाण्डित्य परम्परा' निर्मित क्यों नहीं हुई ? श्रेष्ठता जन्म से नहीं विद्या, कला, कौशल और कर्म से मिलती है। आज हम सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक सभी दृष्टि से पिछड़ रहे हैं। आज के जीवन की विसंगतियों में हमारे समाज को लोग महत्वहीन मानते हैं। भले ही आपके समक्ष सम्मान करें किन्तु पीठ पीछे जो बोलते हैं, आप सुपरिचित हैं। देश में हमारा कोई राजनेता नहीं है, जो हमारा मार्गदर्शन करें और राजनीति में हमारा वर्चस्व बढ़े। यदि अवसर मिलता है तो हम ही अपनों का विरोध करने लगते हैं। हमारे बहुसंख्यक लोग आर्थिक अभाव में जी रहे हैं तो सामाजिक संगठनों में सहभागिता कैसे करें ? हमने धार्मिक क्षेत्रों में पदार्पण तो कर लिया है किन्तु उसके अनुकूल जो योग्यता अर्जित करनी चाहिए, उसका सैद्धान्तिक अभाव है।

इस प्रकार की जटिल परिस्थितियों में सामाजिक विकास की भूमिका तभी तैयार हो सकती है, जब हम अपने बच्चों को उच्च शिक्षित करें। उन्हें प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए उत्साहित करें, जिससे वे सफल होकर उच्च पदों पर प्रतिष्ठित हो सके। कन्याओं का जो विलम्बित विवाह कर रहे हैं, जिसके कारण उन्हें दूसरी जाति में विवाह करने को विवश होना पड़ता है, इस पर ध्यान दें। कन्या और वर की योग्यता के मानदंड में दहेज का विरोध करें। नारी सशक्तिकरण करने के लिए सामाजिक उत्सवों में युवतियों की और सामाजिक प्रगति से अवगत कराने के लिए युवकों को प्रोत्साहित करें। समाज में ''विद्यापति जयंती'' के माध्यम से जागृति लायें।''

– डा0 मोरमुकुट शर्मा

मैथिल ब्राह्मण कब ? कहाँ ? कैसे ?

– पं0 रघुवीर सहाय शर्मा ''मैथिलेन्दु''

प्रस्तुत लेख ब्रज में **मैथिल ब्राह्मण कब ? कहाँ ? कैसे ?** पुस्तक से लिया है, जिसके लेखक हैं पं0 रघुवीर सहाय शर्मा ''मैथिलेन्दु'' आपकी यह पुस्तिका क्रमशः धारावाहिक प्रकाशित की जावेगी, पाठकगण स्वाध्याय कर अपने प्रवास का ज्ञानार्जन करें।

प्रथम अध्याय–प्रवास का इतिहास (मुस्लिम ऐतिहासिक प्रमाण)

खिलजी और तुगलक– मिथिला के राजाओं, पंजीकारों, इतिहासकारों एवं जनता ने केवल ब्रज में मैथिल ब्राह्मण के प्रवास को स्वीकारा है। जिसके दो कारण थे एक तो आगरा का राजधानी होना और दूसरा मथुरा का तीर्थस्थान होना। आगरा के बाद अलीगढ़ (कोल) भी मुगल शासन का केन्द्र रहा है। दाराशिकोह कोल का फौजदार था, जिसका किला आज भी अलीगढ़ में है।

अलाउद्दीन खिलजी– 1301 ई0 में इसने रणथम्मोर आक्रमण किया, जिसमें मिथिला के कर्नाटवंशीय महाराजा शक्ति सिंह ने उसकी सहायता की थी। गुलाम हुसैन की पुस्तक शलीम के अनुसार शक्ति सिंह के पुत्र हरीसिंह देव ने जातीय शुद्धता कारणों से पंजी व्यवस्था को चालू किया तथा समाज में सुधार किये।

गयासुद्दीन तुगलक– 1924 ई0 में गयासुद्दीन तुगलक ने बंगाल पर आक्रमण किया। लौटते समय वह तिरहुत (मिथिला) के रास्ते से आया, वहाँ हरी सिंह देव से उसका मुकाबला हुआ। वह राजा को बन्दी बनाकर दिल्ली लौट गया, इसके उपरान्त मिथिला पर मुसलमानों का अधिकार हो गया। गयासुद्दीन के अत्याचारों से पीडित होकर संवत् 1382 वि0सन् 1324 में लगभग 75 परिवार तीर्थ यात्रा का बहाना कर भागकर ब्रज में शरण ली। फरिस्ता पुस्तक में इसका वर्णन मिलता है, तभी से ब्रजस्थ में मैथिल ब्राह्मणों का प्रवास काल प्रारम्भ होता है। अलीगढ़ के विद्वान जयराम मिश्र ने अपनी पुस्तक ''मैथिल ब्राह्मण निर्णय'' में यह तिथि इस प्रकार दी है– ''बैसाख शुक्ल एकादशी और दिन रविवार'' संवत् 1382 विक्रमी आये देश विसार''

अकबर काल– 1556ई0 में अकबर ने मिथिला पर आक्रमण किया और उसे जीत लिया, वहाँ उसे ज्ञात हुआ कि मिथिला के ब्राह्मण बहुत विद्वान होते हैं, उसने राजा टोडरमल को आदेश दिया कि जो विद्वान आगरा आना चाहें, उन्हें सम्मान के साथ लेकर आयें। उस समय उनके साथ मिथिला के 80 विद्वान सपरिवार उनके साथ आये, जिनको शहजादी मण्डी में बसाया गया। इस मुहल्ले की वास्तु मुगलीय अब तक रही है। एकाथ व्यक्ति के पास अकबर के दिये ताम्र पत्र भी मिले हैं, अबुल फजल के अनुसार अकबर के दरबार में 140 विद्वान थे, जिनमें हिन्दू, बौद्ध, जैन, मुसलमान, ईसाई थे। इनमें मैथिल ब्राह्मणों की संख्या सबसे अधिक थी। इनमें से श्री रघुनन्दन झा तो इतने विद्वान थे कि उन्होंने पुत्रेष्ठि यज्ञ द्वारा जोधाबाई (अकबर की पत्नी) को पुत्र प्राप्ति भी कराई थी, उस उपलक्ष में अकबर ने मिथिला के 54 परगने उनको दान में दिये थे। जिन्हें झा साहब ने अपने गुरू महेश ठक्कुर को गुरू दक्षिणा में दे दिया। मिथिला आये विद्वानों के नाम अबुल फजल लिखित आइने अकबरी, अकबरनामा में दिये हैं इसके अतिरिक्त जैत मथुरा के रामचन्द्र मिश्र हमारा प्रवास, मुल्ला अब्दुल कादिर लिखित मुन्तख्वा उतवारीख, ईश्वरी प्रसाद, उमेश मिश्र आदि अनेक इतिहासकारों ने भी इस विषय में लिखा है।

जहाँगीर काल– जहाँगीरनामा, तुजुके जहांगीरी ग्रन्थों के आधार पर मैथिल ब्राह्मण का ब्रज प्रवास रूका नहीं था तथा पिता की तरह ही वह भी विद्वानों का सम्मान करता था। नूरजहाँ मिलने की भविष्य वाणी पर पं0 विद्याधर मिश्र को आगरा के निकट 2 गाँव दान में दिये थे। महेश ठक्कुर के पुत्र शुभंकर ठक्कुर से मनोमालिन्य हो जाने के कारण श्याम झा 100 ब्राह्मणों के साथ आगरा आये थे।

शाहजहाँ तथा दाराशिकोह– शाहजहाँ तास्सुवी तथा विलासी था किन्तु उसका बड़ा बेटा दाराशिकोह विद्वत प्रेमी तथा सूफीमत को मानने वाला था, उसने कई पुस्तकें भी लिखी, वह हिन्दू, मुस्लिम में समन्वय स्थापित करना चाहता था, 1656ई0 में उसे बनारस तथा कोल का सूबेदार बनाया गया। गीता और उपनिषदों का अनुवाद कराने के लिये उसने बनारस से 150 पंडितों को बुलाया, जिसमें 25 पंडित मैथिल ब्राह्मण थे, जिन्हें उसने कोल (अलीगढ़) में बसाया। शाहजहाँ के बीमार पड़ने पर उसके पुत्रों में गद्दी के लिये युद्ध छिड़ा, जिसमें औरंगजेब विजयी हुआ, उसने दारा को 1659 में प्राणदण्ड दे दिया।

औरंगजेब– वह गुजरात का सूबेदार था, पिता को कैद करने और भाईयों को हराने के बाद वह जुलाई 1658 में गद्दी पर बैठा, उसने भारत को इस्लामी राज्य घोषित कर दिया। जो सरकार की पुस्तक A Short History of Orangjeb के अनुसार उसने हिन्दुओं पर आय का 6 प्रतिशत जजिया कर लगा दिया। 1669 में हिन्दुओं के मन्दिर तथा विद्यालयों को नष्ट करने का आदेश कर दिया, हिन्दू व्यापारियों पर टैक्स दूना कर दिया। वह जानता था कि हिन्दू समाज ब्राह्मणों के मार्गदर्शन पर चलता है अतः ब्राह्मणों को मुसलमान बनाने के लिये अधिक प्रयास किया। मुसलमान ना बनने पर कत्ल करके जनेऊ खजाने में जमा करने पर पुरस्कृत किया जाता था, उसके मरने के बाद उन जनेऊओं को गिना तो नहीं जा सका लेकिन तोलने पर सोलह मन बैठे। यदि ब्राह्मण मुसलमान बन गये होते तो अफगानिस्तान, ईरान, इण्डोनेशिया आदि देशों की तरह भारत में भी एक भी हिन्दू दिखाई नहीं देता। क्षत्रियों आदि समाजों को उस समय मुसलमान बनने पर जागीर प्रदान की गई। ब्राह्मणों के बलिदान के कारण ही आज भारत हिन्दू राष्ट्र है। ऐसी स्थिति में ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मण आगरा तथा अन्य शहरों को छोड़कर यमुनापार के गांवों में शरण ली, जिसको जैसा जीविकोपाजन साधन मिला, वह किया, जो समर्थ तथा विद्वान थे, वे अन्य राजाओं के आश्रय में चले गये। मध्य प्रदेश के छत्रसाल, गड़वाल के फतेशाह, बीकानेर कर्णर सिंह, पंजाब के रणजीत सिंह, हाथरस के दयाराम आदि राजाओं के आश्रय में उस समय के मैथिल विद्वानों के नाम दिये हैं।

यमुना के पश्चिम किनारे पर शाही फौज का आवागमन रहता था, अतः पूर्व की ओर अलीगढ़ मथुरा के गाँवों में अधिकतर लोग छिपे, जो मैथिल ब्राह्मणों के खेड़ा गोत्र कह जाते हैं। मिथिला दर्शन, कवि रहस्य, फतेप्रकाश, हिस्ट्री ऑफ मिथिला, हमारा प्रवास आदि ग्रन्थों में इनके प्रमाण हैं।

ब्राह्मणेत्तर कार्य– ''आपात्कालेन मर्यादनास्तु'' के अनुसार विपत्ति की स्थिति में भरण–पोषण के लिये मैथिल ब्राह्मण समाज ब्राह्मणेत्तर कार्य भी किए, जिनमें काष्ठ कर्म भी सम्मिलित हैं। परन्तु ब्राह्मणों के नैत्यिक कार्यों को कभी नहीं छोड़ा।

शोक-सन्देश

गनेश बाबू शर्मा पुत्र स्व० श्री जानकी प्रसाद जी, कृष्णापुरी मठिया, अलीगढ़ व श्रीमती शान्ती देवी शर्मा पत्नी श्री विजेन्द्र पाल शर्मा , रावण टीला, अलीगढ़ के हुए निधन पर-

मैथिल ब्रा०सं० पत्रिका परिवार शोक प्रकट करता है एवं ईश्वर से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्माओं को शान्ति प्रदान हो व शोकग्रस्त परिवार को धैर्य धारण करने की क्षमता प्रदान हो।

मैथिल ब्राह्मणों के खेड़ों की उत्पत्ति

– आचार्य डा0 ओमप्रकाश झा, जयपुर

गयासुद्दीन तुगलक के मिथिला आक्रमण के समय से मैथिल ब्राह्मणों का बृज श्रेत्र में प्रवास का समय माना है। इसी आततायी क्रूर व हिन्दूविरोधी (ब्राह्मण विरोधी) अत्याचारी गयासुद्दीन के शासन काल में 9 गोत्रो के 75 परिवार तीर्थयात्रा का बहाना कर मिथिला से बृज क्षेत्र में आये और यहीं के प्रवासी हो गए।

इतिहासकारों के अनुसार–गयासुद्दीन तुगलक की मृत्यु के बाद उसका पुत्र मुहम्मद तुगलक सन् 1325 में गद्दी पर बैठा। मुहम्मद तुगलक का मिथिला के शासकों को पूर्ण आशीर्वाद था, मिथिला के शासक दिल्ली आते–जाते थे तथा इनका प्रवास भी यहाँ आरम्भ हो गया था। मिथिला व मुगलकालीन इतिहास ग्रन्थ बताते हैं कि अकबर के समय में मिथिला से मैथिल ब्राह्मण सामूहिक रूप से आए। सन् 1556 मे अकबर के दरबार में सुखपाणि झा आये थे, अकबर ने उनकी विद्वता से प्रसन्न हो, प्रचुर मात्रा के धन दिया। जो परिवार सहित आगरा में ही बस गऐ। बिहार युद्ध से लौटते हुए भी अकबर मिथिला के डुमरी गाँव के पं0 जीवननाथ मिश्र और बहटावेनी पट्टी के शिवराम झा के अतिरिक्त सैकड़ो विद्वानों को अपने साथ आगरा लाया था, राजा टोडरमल भी अपने साथ दरभंगा के श्रीकान्त मिश्र, गृहपाणि झा, दुर्गादत्त झा, वाचस्पति झा तथा पृथ्वीधर झा के अतिरिक्त 71 मैथिल ब्राह्मण परिवारों को अपने साथ आगरा लाए थे। उक्त परिवारों के वशंज ही आज अलीगढ़, मथुरा, आगरा आदि में रह रहे हैं।

बादशाह अकबर को हिन्दू संस्कृति, हिन्दू साहित्य पर बहुत श्रद्धा थी, इसलिए राममण, गीता, श्रीमदभागत व आदि ग्रन्थों अनुवाद हेतु उसने देवी मिश्र, मधुसुदन मिश्र, रामभद्र उपाध्याय, बलभद्र मिश्र, वासुदेव मिश्र, पं0 पुरूषोत्तम ओझा आदि ब्राह्मणों का मिथिला से बुलबाना, जो यहीं स्थायी रूप से बस गऐ। पटना के शाही दरबार आमेर के राजा मानसिंह का पं0 भागीरथ कवि से परिचय हो गया था, जार्ज ग्रिदसन अंग्रेज ने लिखा है कि राजा मानसिंह ने पं0 भागीरथ के एक श्लोक सुनकर प्रसन्न होकर एक लाख रूपये का पुरूष्कार दिया था। पं0 भागीरथ व उनके साथ आने वाले विद्वान पंडित आगरा में स्थायी बस गए।

इसके अतिरिक्त अकबर अन्य शासकों के समय ब्रज क्षेत्र में आए विभिन्न ब्राह्मणों की सूची संख्या लगभग 103 व उनके साथ आए सैकड़ो साथियों की सूची (लगभग 150) पं0 डोरीलाल शर्मा श्रौत्रीय की पुस्तक ''ब्राह्मण वंशो का इतिहास'' में दी व डा0 फूलबिहारी शर्मा की पुस्तक हमारे प्रवास का इतिहास में मिथिला से आए व्यक्तियों की सूची शीर्षक में 61 नाम बताये, जो अधिकांश ब्रज के जिलों मे बस गए।

उपर्युक्त प्रवासी बन्धुओं ने ब्रजक्षेत्र के आगरा, अलीगढ़, मथुरा आदि जिलों में इधर–उधर भ्रमण करते हुए जिन–जिन ग्रामों में स्थायी रूप से प्रवास किया, यही ग्राम उन मैथिल ब्राह्मणों का खेड़ा कहलाया। जैसे मिथिला के ब्राह्मणों को मूल ग्राम का महत्व है, वही स्थान प्रवासी बृजस्थ मैथिंल ब्राह्मणों में खेड़ा का है। यद्यपि ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मणों को अपना खेड़ा याद रहता है लेकिन कभी–कभी याद न रहने अथवा विवादास्पद होने पर इसका निर्णय पंजीकार करते हैं।

स्वामी ब्रहमानन्द सरस्वती

– डोरीलाल शर्मा 'श्रोत्रीय' अलीगढ़

औरंगजेब के अत्याचार एवं असहिष्णुता की नीति के कारण बृज प्रवासी मैथिलों का एवं मिथिलावासी मैथिलों का आवागमन बन्द हो गया था। यह क्रम 1658 ई0 से 1857 की क्रांति तक चला। 1857 की क्रांति के बाद भारत के नव जागरण का सूत्रपात हुआ। भारत के समाज सुधारकों ने 1857 की क्रांति के बाद स्वतंत्र भारत का स्वप्न देखा, इसी समय अलीगढ़ की भूमि पर एक सन्त का अवतरण हुआ, जिन्होंने प्रवासी मैथिल ब्राह्मण समाज मे नई चेतना का जागरण किया, समाजों के इस सन्त का नाम नाम था– परम पूज्य स्वामी ब्रहमानन्द सरस्वती।

परम श्रद्धेय श्री स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती की का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिला के अतरौली तहसील के ग्राम मौसिमपुर में 26 अप्रैल 1853 ई0 में हुआ। आपके पिता का नाम पं0 हुलासीराम था। आप सरिसव मूल के शांडिल्य गोत्रीय मैथिल ब्राह्मण थे। आपका पूर्व नाम रणधीर था। आपको वेद–उपनिषद आदि के साथ हिन्दी, संस्कृत आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान था। आपके सभी संस्कार समयानुसार हुए। कुछ समय ग्रहस्थ जीवन के रहने के पश्चात आपने सन्यास ग्रहण कर लिया और स्वामी ब्रह्मनन्द के नाम से विख्यात हुए। आपने अयोध्या, काशी की पैदल यात्रा करते हुए मिथिलांचल पहुंच कर 10–11 वर्ष प्रवास लिया। वहाँ आपने मैथिल पंजी ज्ञान का पूर्ण अध्ययन एवं सकंलन कर अलीगढ़ को वापिस आए, अलीगढ़ में स्वामी जी ने अथक प्रयासों में ''मैथिल ब्राह्मण सिद्धान्त सभा और मैथिल ब्राह्मण संस्कृत पाठशाला की रामघाट रोड पर सन् 1889 ई0 में स्थापना की, यही संस्कृत पाठशाला वर्तमान में श्रीमद् ब्रह्मानन्द इण्टर कालिज के नाम से विद्यमान है। आपने समाजोत्थान के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पित कर दिया, श्री स्वामी जी 22 फरवरी सन् 1895 ई में ब्रह्ममलीन हो गऐ।

पूज्य स्वामी जी जीवन पर्यन्त मैथिल ब्राह्मण समाज के उत्थान में लगे रहे। उन्होंने अपना सर्वस्व समाज को समर्पित कर देश के विभिन्न भागों में प्रवास कर जाति के उत्थान हेतु बिगुल बजाया। eqxy dky में मिथिला से हमारा आना–जाना, जो समाप्त सा हो गया था, हम अपने पूर्वजो की जन्म भूमि से दूर होते जा रहे थे, पूज्य स्वामी के प्रयास से ही मिथिला से हमारा पुनः सम्पर्क बन सका, फलतः हमारे विवाह सम्बन्ध आदि पुनः जुड़ गए। मिथिला से पंजीकारो का आना जाना प्रारम्भ हुआ। बृजस्थ मैथिल ब्राह्मणो ने पंजी मे अपनी उत्तीड़े (वंश विवरण) चढ़वाई। मिथिला से प्रति वर्ष पंजीकार एवं विद्वान ब्रज क्षेत्र के जिलों मे आते रहे, पं0 बवूए मिश्र व पं0 जगदीश झा प्रमुख थे। यदि हम पूज्य स्वामी जी के अधूरे रहे कार्यों को पुनः प्रारम्भ कर पूर्ण करेंगे तभी पूज्य स्वामी जी को हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं

देवांश मिश्रा
(7 जनवरी)

मैथिली मिश्रा
(31 जनवरी)

यदि आप पत्रिका के मासिक सदस्य हैं तो आप भी बच्चों के फरवरी माह में होने वाले जन्मदिन व अपनी शादी की वर्षगाँठ का समाचार, पत्रिका में निःशुल्क प्रकाशन हेतु अपना फोटो नाम व दिनांक हमें व्हॉटसअप करें:–
(मैथिल ब्राह्मण संदेश ग्रुप) 9259647216

समाज में जागरण की आवश्यकता

— **जयप्रकाश शर्मा** (प्रधान सम्पादक)

जो समाज सुप्तावस्था में रहते हैं, वह कभी प्रगति नहीं कर सकते। मैथिल ब्राह्मण समाज भी अर्द्ध निलीमित अवस्था में है, यह न पूर्णरूप से सोया हुआ है और न जागा हुआ। प्रकाण्ड विद्वानों मनीषियों का यह समाज आज अपनी अधोगति से गुजर रहा है, क्योंकि यह ऐसा समाज है, जो नेतृत्वहीन है और जो अंगुली पर गिनने लायक छुटभइये नेता है, वह न तो नेतृत्व करना जानते हैं और ना ही उन्होंने किसी योग्य गुरू से नेतृत्व करना सीखा है, कोई गौड फादर नहीं बनाया है। इसलिए हम हर स्तर पर पिछड़ते जा रहे हैं। शायद महापण्डित रावण का सारा अहंकार हमारे समाज में ही प्रवेश कर गया है। कुछ नवधनाड्य धनबल पर नेतृत्व करने की चाह रखते हैं परन्तु उन पर जनबल नहीं है, पर वह लोग अखबारों में तो नेता है हीं। कभी कोई सामाजिक कार्य नहीं किया, कभी समाज में घुले मिले नहीं, कभी समाज का दर्द नहीं समझा। ऐसे लोगों का नेतृत्व करने का भविष्य स्वयं सामने दिखाई दे रहा है, जिनमें त्याग, स्नेह, समरसता, बन्धुत्व की भावना नहीं है, ऐसे लोग हीरो होकर भी जीरो हैं। यह मेरी एक दिन की निराशा नहीं है बल्कि वर्षानुवर्षी अनुभव है। समाज को प्रगति पर लाना है तो लकीर का फकीर बनना छोड़ना पड़ेगा। एक बार ऐसे राजनैतिक दलों को जो हमारी जानबूझकर उपेक्षा करते हैं, धूल चटानी पड़ेगी। राजनीति संत लोगों का कार्य नहीं, जो केवल एक मार्ग पर चलते हैं। समाज को संगठित होकर अन्य मार्ग भी ढूंढने होंगे, जिनसे समाज को लाभ मिलने की सर्वाधिक अपेक्षा हो, इस प्रगति मार्ग में अवरोधक बनने वाले लोगों को इतिहास के कूड़ेदान में फेंकना होगा, चाहे वह वह कितने ही निजी हो। आर्थिक मोर्चे पर हम बहुत पीछे हैं, दो चार अंगुलियों पर गिनने लायक हस्तियों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होने से समाज की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ नहीं होती, हमारे कारखानेदारों को ट्रेडिंग के कार्यों पर विशेष ध्यान देना चाहिए, मैन्यूफैक्चरिंग पर कम से कम। क्योंकि निर्माण करने का सारा लाभ ट्रेडिंग वाले ले जाते हैं और हम कम प्रतिशत लाभ पर संतोष कर लेते हैं, इसके अतिरिक्त हमें दुकानदारी पर भी ध्यान देना होगा, जिनमें छोटी दुकान से लेकर बड़ी दुकानों तक सम्मिलित है। शायद इनमें अधिक लाभांश है, इसीलिए कई जातियां इससे फल रही हैं, पनप रही हैं। आज के भौतिक युग में आर्थिक रूप से सम्पन्न जातियां ही अग्रणी रहती हैं। इसलिए यह सदेश अनुकरणीय है ''सर्वेगुणा काँचनाम् आश्रयंति''। संगठनों को इस ओर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है, इसलिए जागो! उठो!! और आगे बढ़ो!!!

एक लड़का दौड़ता हुआ डॉक्टर के पास पहुँचा और उन्हें अत्यधिक आग्रह करके एक रोगी को दिखाने ले गया। डॉक्टर ने देखा कि एक कुत्ता सड़क पर घायल पड़ा है। वह लड़का उसी के इलाज के लिए उन्हें लाया है, इस पर डॉक्टर झल्लाया, परन्तु लड़का अपनी बात पर अडिग था। उसने कहा–"मनुष्य के समान कुत्ते को भी कष्ट होता है। हम मनुष्यो का ही दुख दूर करें और किसी प्राणी का नहीं, क्या यह उचित है?" डॉक्टर में सहानुभूति जागी और उसने कुत्ते का इलाज किया। कुछ दिनो में वह कुत्ता अच्छा भी हो गया। वह सहृदय बालक ही आगे चलकर महामना पं0 मदन मोहन मालवीय कहलाया।

रत्न धारण द्वारा भाग्य निर्माण

– **आचार्य पूरन चन्द्र शास्त्री,** अलीगढ़

मूंगा– मूंगा धारण करने से मंगल ग्रह जनित समस्त दोष शांत होते हैं। रक्त (खून) साफ करता है व उसमें वृद्धि करता है। खून से सम्बधित रोग ठीक हो जाते हैं। हृदय रोग में लाभ पहुँचाता है। हाई ब्लड प्रैशर (उच्च रक्तचाप) के लिए भूत–प्रेतादि से बचाव के लिए धारण करते हैं। प्रायः इसलिए छोटे बच्चों के गले में मूंगे के दान डाल दिए जाते हैं।

हीरा– इसे धारण करने से शुक्र ग्रह जनित समस्त दोष शांत होते हैं। धन–धान्य की वृद्धि व अटूट लक्ष्मी बनी रहती है। वीर्य दोष को दूर करता है। वंश को बढ़ाता है। इसे पहनने से जादू–टोना नहीं लगता। बुद्धि, सम्मान, बल व शरीर की पुष्टता सदैव बनी रहती है।

पन्ना– इसे पहनने से बुध ग्रह जनित समस्त दोष शांत होते हैं। धारक की चंचल चित्त वृतियाँ शांत व संयमित रहती हैं तथा धारक को मानसिक शांति प्राप्त होती है। इसे धारण करने से मन एकाग्र होता है। यह काम–क्रोध आदि विकारों को शांत कर धारक को असीम सुख व शांति प्रदान करता है बुद्धि तथा स्मरण शक्ति की वृद्धि के लिए विद्धार्थी यदि पन्ना पहनें तो बुद्धि तीक्ष्ण होती है। सरस्वती माता की कृपा रहती है। भाग्य को बढ़ाता है।

मोती– इसे धारण करने से चन्द्र ग्रह जनित दोष शांत होत हैं। इसकी तासीर ठंडी होने के कारण यह क्रोध शांत करता है तथा मानसिक तनाव भी दूर करता है। बुखार में लाभ पहुँचाता है। शरीर में गर्मी ज्यादा हो तो मोती पहनना उत्तम होता है।

माणिक– इसे धारण करने से सूर्य ग्रह के सभी दुष्प्रभाव नष्ट हो जाते हैं। भय व्याधि तथा दुख क्लेश आदि सभी कष्ट दूर होते हैं। धारक को सुख सम्पत्ति, धन–धान्य व रत्न आदि की प्राप्ति होती है। स्त्रियों के गर्भपात होन से रोकता है। वंश की वृद्धि करता है।

पुखराज– इसे धारण करने से बृहस्पति (गुरू) ग्रह जनित दोष शांत होते हैं। सामाजिक प्रतिष्ठा व व्यापार व्यवसाय आदि में वृद्धि करता है। अध्ययन व पढ़ाई लिखाई के क्षेत्र में भी यह उन्नति का कारक माना गया है। यह कुष्ठ व चर्मरोग नाशक माना गया हैं स्त्रियों को पति, संतान व गृहस्थ सुख के लिए इससे बढ़कर कोई रत्न नहीं है। वैवाहिक सम्बन्धों में दृढ़ता प्रदान करता है। यदि किसी कन्या की शादी में अनावश्यक विलम्ब हो रहा है तो पुखराज का इस्तेमाल करना चाहिये।

नीलम– शनि ग्रह के समस्त दुष्प्रभाव को समाप्त कर धारक की सभी विपरीत परिस्थितियां को उसके अनुकूल बनाता है। शनि की साढ़े साती के दुष्प्रभाव को करने में अति लाभदायक है। आयु को बढ़ाने वाला है। बल, बुद्धि व वंश की वृद्धि करता है। मुख की कांति को बढ़ाता है। सुख सन्तोष देने वाला व बील वीर्य व नेत्र ज्योति को बढ़ाता है। धन, धान्य, यश, मान सम्मान को बढ़ाने में सहायक है।

गोमेद– इसे धारण करने से राहु ग्रह के अनिष्ट प्रभाव शांत होते हैं। नकसीर, ज्वर, वायुगोला, प्लीहा तथा समस्त प्रकार के उदर (पेट) रोगों में इसे लाभदायक माना गया है। शत्रुओं का भय नहीं रहता तथा उन पर विजय प्राप्त होती है। इसी गुण के कारण कोर्ट कचहरी तथा मामले मुकदमें आदि के विषय में लाभदायक माना गया है। जिन बच्चों का पढ़ाई में मन न लगता हो, उन्हें गोमेद धारण करना चाहिये।

लहसुनिया– इसे केतु ग्रह की शान्ति के लिए धारण करते हैं। दुःख दरिद्रता व्याधि भूत बाधा आदि के बचाव के लिए उपयुक्त है। युद्ध के क्षणों में यह रत्न प्रबल शत्रु संहारक माना जाता है।

Semi Precious

जो व्यक्ति रत्नों को उनके कीमती होने के कारण उन्हें पहनने में असमर्थ हैं वो रत्नों के स्थान पर उनके उपरत्न धारण करके कुछ लाभ प्राप्त कर सकते हैं। रत्नों के उपरत्नों का वर्णन चार्ट में दिया है। कुछ प्रमुख उपरत्नों की उपयोगिता व उनके महत्व का वर्णन नीचे दिया गया है–

सुनहैला– बृहस्पति ग्रह की शांति के लिए इसे पुखराज का उपरत्न माना गया है। इसे धारण करने से अस्थमा समेत सांस की तकलीफों से राहत मिलती है।

कटैला– शनि ग्रह की शांति के लिए कटैला को उपरत्न के रूप में धारण करते हैं। शराब छुड़ाने के लिए रामबाण है। जादू, टोना, टोटके को बेअसर करता है। अनिद्रा रोग दूर करता है। आध्यात्मिक उन्नति में सहायक है। यह साहस व शांति का प्रतीक है। बुधवार को धारण करना अत्यन्त शुभ है।

संगेमरियम– यह बवासीर की बीमारी में लाभदायक है।

रोगानुसार रत्न धारण

मानसिक अस्वस्थता के लिए	– पन्ना + पुखराज + मून स्टोन
बुद्धि व स्मरण शक्ति की वृद्धि के लिए	– पन्ना या तुरमली या गोमेद
क्रोध शांति के लिए	– (पन्ना + मोती) या स्फटिक माला या मोती की माला
भूत प्रेतादि से बचाव	– मूंगा या लहसुनिया
कैंसर	– मूंगा + नीलम
दुर्घटना से रक्षा	– मूंगा + मोती
शत्रु पर विजय	– मूंगा + गोमेद
वीर्य दोष	– हीरा या सफेद पुखराज
वंश में वृद्धि	– नीलम या माणिक या हीरा
पेट की बीमारी या गैस्टिक	– लहसुनिया या गोमेद
नपुंसकता	– मूंगा + पीला पुखराज सोने में
एलर्जी	– लहसुनिया या गोमेद
आत्मविश्वास में कमी	– मूंगा या पन्ना या कारलेनियन
फुलवैहरी	– सफेद मूंगा + लाजवर्त
शुगर	– सफेद मूंगा + सफेद पुखराज
ब्लड प्रैशर	– मैग्नेटिक या गनमैटल या ब्लड स्टोन
हार्ट अटैक	– कहरवा य यशव व रूद्राक्ष
दिल की धड़कन	– संग येशव की नादली
जिन बच्चों का पढ़ाई में मन न लगता हो	– पन्ना या गोमेद या तुरमली

रत्नों को राशि अनुसार पहनने की विधि हेतु आचार्य पूरन चन्द्र शास्त्री (इस लेख के लेखक) से मोः 9412442343 से सम्पर्क करें अथवा फरवरी के अंक में पढ़ें।

आवश्यक सूचना

- **बन्धुवर मैथिल ब्राह्मण संदेश पत्रिका के प्रकाशन का वास्तविक मूल्य लगभग १४ रू० आता है, जो आपको १०रू० में दी जाती है। ४रू० का यह घाटा आपके निम्न सहयोग करने से पूरा हो सकता है।**
- **अपने क्षेत्र में१२० रू० प्राप्त कर पत्रिका के अधिकाधिक वार्षिक सदस्य बनावें।**
- **क्षेत्र के भामाशाह उद्योगपतियों से पत्रिका में विज्ञापन प्रकाशित कराके पत्रिका को स्वावलम्बी बनाएं।**
- **आप अपनी पत्रिका पढ़कर कम से कम २ स्व-जातीय बन्धुओं को पत्रिका पढ़ने को अवश्य दें।**
- **पत्रिका को और अधिक उपयोगी बनाने हेतु अपनी रचनाऐं व अपने अमूल्य सुझाव अवश्य दें।**

हम दीर्घजीवी कैसे हों ?

– **स्वामी मोक्षानन्द सरस्वती,** रोहतक

हम किस प्रकार अधिक समय तक जीवित रह सकते हैं, इस बारे में सदा ही गवेषणाएं होती रही हैं। दीर्घ जीवन का अर्थ यह नहीं है कि हम बिस्तर में पड़े–पड़े कराहते हुए दीर्घजीवन व्यतीत करें। दीर्घजीवन का तो असली अर्थ है कि हम अधिक काल तक जिएं और जब तक जिएं, हाथ–पैर से स्वस्थ रहें। किसी दूसरे पर अपनी रोजी के लिए आश्रित न रहना पड़े। वेद में भी हम परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना करते हैं कि हम सौ वर्ष तक जिएं, सौ वर्ष तक देखें, सौ वर्ष तक सुनें, आदि–आदि। (शतं जीवेम शरदः शतम्, शतं श्रणुयाम शरदः शतम् पश्येम शरदः शतम्)। पर असल बात यह है कि दीर्घायु के सम्बन्ध में सबसे महत्वपूर्ण समस्या बुढ़ापे पर काबू पाने की है। अनेक अनुसंधानों और परीक्षणों से साबित हो चुका है कि बुढ़ापा एक रोग है और यह विभिन्न व्यक्तियों को विभिन्न आयु में आ घेरता है। आज के वैज्ञानिकों का विश्वास है कि संयम और औषधियों के उपचार से बुढ़ापे के रोग पर काबू पाया जा सकता है। वास्तव में हर व्यक्ति दीर्घायु प्राप्त कर सकता है, पर हम अपनी गलतियों से इसे छोटा कर डालते हैं। एक रूसी कहावत है कि **मनुष्य मरता नहीं, बल्कि धीरे–धीरे स्वयं का मार डालता है।**

दीर्घजीवन के बारे में बहुत से विशेषज्ञों का ख्याल है कि बुढ़ापा जल्दी शुरू होने का कारण विष है, जो भोजन आदि से शारीरिक अवयवों में इकठ्ठा होता रहता है। जवानी में शरीर यन्त्र में इतनी सामर्थ्य होती है कि वह उस विष को बाहर निकालता रहता है। पर आगे चलकर शरीर की प्रतिरक्षा व्यवस्था कमजोर पड़ जाती है तो यह विष अधिक मात्रा में इकठ्ठा होता जाता है जिससे असमय में ही बुढ़ापा आने लगता है। जरा शास्त्री आज ऐसे पदार्थ की खोज में हे, जिससे इस विष को दूर किया जा सके। इस क्षेत्र में जो परीक्षण किये गये हैं, उनसे पता चला है कि 'हारमोन ग्रन्थियों' के सत्व से बुढापे की प्रक्रिया को रोका जा सकता है। कुछ परीक्षणों से यहां तक पता चला है कि ऐसे प्रयोग से बाल पकने भी रूक गये और फिर से काल पड़े गये। हमारा साहित्य दीर्घजीवी ऋषि मुनियों के उदाहरणों से भरा पड़ा है। उल्लेख है कि दत्तात्रेय ने हरिद्वार में 10 हजार वर्ष तक एक पैर पर खड़े रहकर तपस्या की थी। शंकराचार्य के गुरू गोविन्द पादाचार्य के बारे में विद्वानों की धारणा है कि वे एक उत्कृष्ट योगी थे और एक हजार वर्ष की आयु में भी 16 वर्ष के से दिखाई देते थे। भगवान बुद्ध ने भी अपने शिष्य आनन्द से कहा था कि यदि मैं चाहूं तो एक कल्प तक जीवित रह सकता हूं।

वेदों में शतायुओं का काफी वर्णन मिलता है। ऋग्वेद में च्यवन और बलि का उल्लेख है। हमें इनके बारे में विशेष विवरण प्रस्तुत करना अभीष्ट नहीं है। केवल इतना ही बता देना चाहते हैं कि हमारे पूर्वजों ने मनुष्य को दीर्घायु प्रदान करने के लिए काफी प्रयत्न किये थे। वैसे तो आज भी हमारे देश में दीर्घजीवियों की कोई कमी नहीं है। हमारे 1962 के आम चुनावों से इस सम्बन्ध में जो जानकारी प्राप्त हुई थी, उससे पता चलता था कि पंजाब के पटियाला का रहने वाला प्रभु नाम का व्यक्ति, जिसकी आयु 200 वर्ष की बतायी गई, आम चुनावों में अपना मत डालने, आया था। हरियाणा की राजावती नाम की एक महिला जिसकी आयु 160 वर्ष बताई गई और जो गुडगांव जिले की बल्लभगढ तहसील में आखिर गांव की रहने वाली थी।

1965 में जनसंख्या के जो आंकडे उपलब्ध थे उन आंकडों के अनुसार पंजाब में 17 पुरूष और नौ स्त्रिया ऐसी थीं, जिनकी आयु 125 वर्ष से अधिक बताई गई। वहां 1943 पुरूष और 646 स्त्रियां 100

वर्ष से अधिक आयु की बताई गई। आन्ध्र प्रदेश में आंकडों के अनुसार 100 वर्ष से अधिक आयु के 2381 व्यक्तियों का पता चला जिनमें बहुत से लोग 130 वर्ष की आयु के थे। 24 परगना जिले के महेसताल में 107 वर्ष के श्री रसिक चन्द्र सरकार बिना किसी की सहायता के मतदान केन्द्र पर आये और अपने आप मतदान पत्र पर छाप लगाई। महाराष्ट्र राज्य के सतारा जिले में बघीटी गांव के रहने वाले श्री रामराव गणपात्र की उम्र 119 वर्ष की बताई गई।

बंगाल के 24 परगना जिले की एक अदालत में 1962 के अगस्त मास में फतहपुर नामक गांव का एक गवाह गवाही देने आया, जिसने अपनी आयु 158 वर्ष बताई। इसका नाम शेखनजीव था। काम्पटी (महाराष्ट्र) में श्रीमती विसानी बाई नाम की एक महिला 114 वर्ष की थी। हिमाचल प्रदेश में मनाली के पास मटियाना गांव का एक व्यक्ति 117 वर्ष का था। देवरहा बाबा की उम्र का कोई अंदाजा ही नहीं। कोई उन्हें दो सौ वर्ष तो कोई 500 वर्ष का तो कोई और भी ज्यादा उम्र का बताता है। रूस में आज हजारों व्यक्ति ऐसे पाये जाते हैं जिनकी आयु 100 वर्ष से अधिक है। अजरबेजान का एक किसान मखमूद इबेजर तो 152 वर्ष की आयु में परलोक सिधारा था।

अमेरिका में शौलस इण्डियाना के मेरी एलन पौलटन की उम्र 106 वर्ष बताई गई। इओवा नामक एक व्यक्ति ने 113 वर्ष की आयु में शादी करने का लाईसैंस प्राप्त किया था। मेरी ग्राम में एक ग्रीक महिला 112 वर्ष की आयु में फिर से अपनी शादी करने के लिए आतुर हो उठी थी। श्रीमती जुआना ओरटेजा बिलारिया नाम की एक स्पेनिश महिला अपने को 112 वर्ष की बताती रही। उसके नए दांत उगने लगे थे और सफेद बाल काले पडने लगे थे। केन्या में मोम्बासा के हजहम्र देन नामक व्यक्ति ने 125 वर्ष की आयु में अपनी ऐहिक लीला समाप्त की और 106 वर्ष की आयु में उसका एक बच्चा पैदा हुआ था। कुछ समय पूर्व यूक्रेन में 2700 व्यक्ति 100 से अधिक आयु के थे जिनमें दो नेपोलियन के समय के बताये गये और जिनकी आयु 143 और 148 वर्ष थी। जार्जिया में लगभग दस हजार व्यक्ति ऐसे थे, जिनकी आयु 100 वर्ष से अधिक या इसके लगभग थी।

दक्षिण अफ्रीका में पोर्ट एजिलाबेथ में विलियन विसेंट नामक व्यक्ति की आयु कुछ वर्ष पूर्व डॉक्टरों के एक दल ने 160 वर्ष घेषित की थी। कोलम्बिया के कोसा क्षेत्र में मेरिया जेसस सालिड नाम की एक महिला 150 वर्ष की थी। इंग्लैण्ड में ओल्डपार नामक व्यक्ति की मृत्यु 152 वर्ष की उम्र में हुई। ब्रिटेन का सबसे बुढ्ढा आदमी हेनरी जेनर्किस था, जिसकी मृत्यु 1970 में 169 वर्ष की आयु में हुई। जादों आधा नामक तुर्क ने 157 वर्ष की आयु में इस संसार को छोडा था। चीन का लीच्यांगयीन जारों आधा का समकालीन था, जो 152 वर्ष का होकर मरा।

इस लम्बी सूची को देने का प्रयोजन यह बतलाना है कि संसार में आज भी दीर्घजीवी व्यक्तियों की कमी नहीं है।

इनके दीर्घजीवन का रहस्य क्या है, इसका ठीक–ठाक अभी कोई भी पता नहीं लगा पाया है। जहां तक उनकी खुराक के बारे में पता चला, उनमें अधिकांश दिन में तीन–चार बार खाना खाते थे। प्रायः अधिकांश शुद्ध सात्विक भोजी थे। शराब और तम्बाकू का शौक इनमें नहीं के बराबर पाया गया। प्याज और लहसुन का सेवन वे करते थे। इन दीर्घजीवियों में अधिकांश लोग किसान और गड़रिये थे, जो निश्चिन्तता और प्रसन्नता के साथ बड़ी से बड़ी मशक्कत का काम करते थे। इनका अधिकांश समय वनों और जंगलों के शुद्ध सात्विक वातावरण में व्यतीत होता था।बुल्गारियां तो अपने दीर्घजीवियों के पहले से ही विख्यात थे। यहा के लोग लहसुन, प्याज और दही को अपने दीर्घजीवन का रहस्य मानते हैं। वैसे दीर्घजीवन के भिन्न–भिन्न कारण हो सकते हैं, पर इसके लिए संयमित जीवन की महत्ता पर सभी एकमत हैं। ये सभी ऐशो–आराम, आलस्य तथा प्रमाद के जीवन में विश्वास नहीं रखते। बम्बई

राज्य के दीर्घजीवी रामराव गणपात्र भोइटी का विश्वास था कि उनके दीर्घजीवन का रहस्य प्रातः 5 बजे उठकर स्नान, ध्यान और भजन–पूजन है।

ब्रिटेन के दीर्घजीवी श्री ओल्डपार का कथन था कि वे प्याज और पनीर के कारण इतने अधिक दिन तक जिन्दा रह सके। जब सम्राट चार्ल्स द्वितीय ने उनसे उनके दीर्घजीवन का रहस्य पूछा तो उनका उत्तर था कि वे अपने सर को ठण्डा और पैरों को गर्म रखते हैं और सुरा–सुन्दरी से दूर रहते हैं। भारतरत्न महर्षि डा0 कर्वे का 106 वर्ष की आयु में निधन हुआ और भारतरत्न डा0 विश्वेश्वरैया ने 101 वर्ष की आयु में अपनी इहलीला पूर्ण की। स्वर्गीय डा0 विश्वेश्वरैया ने अपनी दीर्घायु के सम्बन्ध में समय–समय पर कुछ सूत्र कहे, जिनमें सबसे प्रमुख यह है कि मनुष्य की आयु उसकी दृढ़ इच्छा–शक्ति पर निर्भर करती है। उनके मरणोपरान्त उनके चिकित्सक ने भी यही कहा कि डा0 विश्वेश्वरैया बहुत पहले मर जाते, किन्तु अपनी दृढ इच्छा शक्ति के कारण उनकी सांस चलती रही। बहुत लम्बा जीने की अपनी इच्छा की अभिव्यक्ति वे मजाकिया लहजे में इस तरह कहते थे– ''बुढापे ने तो मुझे काफी दिनों से घेर रखा है, लेकिन मैं मौत से अपने लिए कह देता हूं कि विश्वेश्वरैया घर पर नहीं है।''

यह एक बहुत पते की बात है कि मनुष्य दृढ़ इच्छा शक्ति से दीर्घायु प्राप्त कर सकता है। वेद में मानस चिकित्सा का उल्लेख है और कहा गया है कि मन की संकल्प शक्ति से किसी भी रोग पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

स्वर्गीय डॉक्टर का दूसरा सूत्र था आत्म–संयम, जिसका अर्थ है निश्चित समय पर खाना, निश्चित समय पर काम करना और निश्चित समय पर सो जाना। उनका मत था कि मनुष्य को अपने सारे काम अनुशासन और योग्यतापूर्वक करने चाहिए। ऐसा करने से चिन्ताएं घटती हैं।

वैसे तो बुढ़ापे की प्रक्रिया शुरू होने का कोई एक खास कारण नहीं है। व्यक्ति पर जब विपरीत परिस्थितियों का भार पड़ता है तो वह असमय में ही जरा–जीर्णता का शिकार हो जाता है। इसलिए जरूरी है कि हर जगह ऐसी परिस्थितियां पैदा की जाये, जिससे व्यक्ति स्वास्थ्य स्थिर रखने और दीर्घ जीवन प्राप्त करने में समर्थ हो सके। वेश परम्परा का भी स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन से गहरा सम्बन्ध है। यदि मां बाप स्वस्थ और दीर्घजीवी है तो उनकी सन्तान में इन गुणों का आ जाना अवश्यम्भावी है। दीर्घ जीवन का सौभाग्य देश विदेश के उक्त व्यक्तियों को कैसे सम्भव हुआ, **यह पढ़ें अगले अंक में।**

मैथिल ब्राह्मणों का इतिहास वेबसाइट पर

www.maithilbrahminmahasabha.in

मैथिल ब्राह्मणोत्पत्ति उनकी महिमा, गोत्र, प्रवर, मूल, पंजी व्यवस्था, मिथिला पर मैथिल ब्राह्मणों का शासन, मैथिल ब्राह्मणों का बृज में आगमन, देशभर के मैथिल ब्राह्मण समाज के विशिष्ट व्यक्ति, मैथिल ब्राह्मणों की पत्रिकाऐं आदि विषयों का प्रमाणिक ऐतिहासिक विवरण मैथिल ब्राह्मण सन्देश पत्रिका को आप उक्त वेबसाइट पर पढ़ सकते हैं।

उक्त विवरण के अतिरिक्त आप वेबसाइट के अन्त में ''मैथिल ब्राह्मण समाज के हितचिन्तक सदस्य शीर्षक'' से देखेंगे। मैथिल ब्राह्मण समाज के हितचिन्तक सदस्यों का फोटो सहित पूर्ण वंशावली विवरण। यदि आप भी अपने को मैथिल ब्राह्मण समाज का हितचिन्तक समझते हैं तो आप भी अपना फोटो, अपना परिचय, वंश विवरण अन्यान्य विविध क्षेत्रों में विविध गतिविधियों का वीडियो अपलोड करा सकते हो, इस हेतु आप उक्त वेबसाइट के षीर्शक मैथिल ब्राह्मण समाज के हितचिन्तक के लिंक पॉइन्ट को क्लिक कर सम्बन्धित फार्म को डाउनलोड कर पूर्ण भरकर हमें पत्रिका के व्हाॅटसअप नम्बर 9259647216 पर भेज दें।

सच्चा गुरू

– **विक्रम पाण्डेय**, माली नगला, अलीगढ

'सद्गुरू देव की जय' आघोष से आकाश गूंज उठा। जैसे आकाश से भी प्रतिध्वनि गूंज उठी हो– 'सद्गुरू देव की जय!'

प्रवचन पूरा हुआ। गोस्वामी प्रेमानंद एक प्रख्यात संत थे। उनके व्याख्यान में गजब का जादू था। हजारों लोग उनके प्रवचन सुनकर अपने मन, बुद्धि और आत्मा को पावन करते थे। आज के व्याख्या का विषय था 'जीवदया'। प्राणीमात्र पर दया करनी चाहिए, इस विषय पर उन्होंने प्रवचन दिया था। उसकी श्रोताओं पर गहरी छाप पड़ी थी। उनके विशाल मस्तक पर सुन्दर सा तिलक और शरीर पर रेशमी दुपट्टा था। वे श्रोताओं की भीड़ में से निकले, अपने आश्रम की ओर बढ़ चले। रास्ते में से जब गुजर रहे थे, लोग बीच–बीच में झुक–झुककर उनके चरण–स्पर्श कर रहे थे। 'जय राधेश्याम' कहकर वे भक्तों को आशीर्वाद देते जाते थे।

निकट ही एक खुली गंदी नाली से 'छप' से कुछ गिरने की आवाज उन्हें सुनाई दी। इतना ही नहीं, उस नाली में से 'छप' की आवाज के साथ ही गंदे पानी के कुछ छींटे उछलकर महाराज जी की उजली पोशाक पर भी पड़े। उसकी परवाह किए बिना महाराज नाली की ओर बढ़े और भीतर की ओर झांकने लगे। आसपास से गुजर रहे कुछ लोग विचार में पड़ गए कि इतना बड़ा महात्मा गंदी नाली में क्यों झांक रहा है ?

गोस्वामीजी ने देखा, कि एक बड़ा–सा चूहा नाली के कीचड़ में छटपटा रहा है। आकाश में उड़ती चील इसको चोंच में दबाकर उड़ा ले जाना चाहती थी, पर इतना बड़ा चूहा उसकी चोंच में से छिटक गया और नाली में आ गिरा। अब भी वह चूहा नाली में से निकलने के लिए छटपटा रहा था। कुछ पलों के लिए वह किनारे तक आता और फिसलकर उसी में जा गिरता। चील की चोंच से आहत चूहे में अब इतनी शक्ति नहीं रह गई थी कि वह नाली से स्वयं बाहर निकल सके। नाली में झांक रहे गोस्वामी जी विचार कर रहे थे– इस अशक्त चूहे को बचाना चहिए ? चील की चोंच के झपाटे से बेचारा बड़ी मुश्किल से बच पाया है। इसे अब इसे नहीं बचाया गया, तो कुछ पलों में इसकी जीवन लीला समाप्त हो जायेगी। उन्होंने उस चूहे को बचाने के लिए नाली की ओर हाथ बढ़ाया परन्तु तभी उन्हें विचार आया कि 'मेरे कपड़े और हाथ खराब हो जाएंगे और यहां आसपास हाथ और रेशमी चादर धोने के लिए पानी भी तो नहीं है। अब क्या किया जाए?''

यह विचार आते ही उन्होंने बढ़ा हुआ हाथ समेट लिया। तभी वहां एक बारह वर्ष का बालक आया। उसके हाथ में किताबों का थैला था। विद्यालय से चार बजे छूटकर उसने गोस्वामी जी का 'जीव–दया' पर व्याख्यान सुना था। शाम हो जाने के कारण अब वह जल्दी–जल्दी अपने घर की ओर जा रहा था परन्तु उसने गोस्वामी जी की इच्छा को जान लिया था। बस्ते को नाली के किनारे रखकर वह लड़का गदंगी का विचार किए बिना नाली में उतर गया। चूहे को हाथ से पकड़ कर बाहर निकाला और सामने के खण्डहर में छोड़ दिया। जब तक चूहा सुरक्षित स्थान पर नहीं पहुंच गया, तब तक वह बालक उसे ताकता रहा। फिर नाली के गंदे पानी से ही जैसे–तैसे हाथ धोकर उसने नाली के किनारे

खड़े गोस्वामी जी के चरण–स्पर्श किए।

गोस्वामी जी अभी विचारमग्न अवस्था में ही खड़े थे। उन्हें यकायक ख्याल आया कि यह दयालु बालक चूहे के प्राण बचाकर मुझे प्रणाम कर रहा है। बालक को देखते ही स्वयं के प्रति उनके मन में तिरस्कार का भाग जाग उठा। वे मन ही मन पश्चाताप करने लगे– 'मेरे वेश को धिक्कार है, धिक्कार है, मेरे दिए गए व्याख्यानों को। मेरी अपेक्षा तो यह अबोध बालक ज्यादा ज्ञानी है, कर्तव्यनिष्ठ और दयालु है। सच्चा गुरू में नहीं यह बालक है।

तभी उनकी विचार मग्नता को तोड़ते हुए लड़का बोला– ''गुरूदेव! मैं आपको प्रणाम करता हूँ।' अश्रु भरे नेत्रों को पोंछकर और बालक को अपनी रेशमी चादर ओढ़ाकर, प्रणाम करके गोस्वामी जी बोले– 'मेरे लाल! मैं तो केवल नाम का ही गुरू हूं, सच्चा गुरू तो तू है। केवल प्रवचनों से ही गुरू नहीं बना जा सकता। आचरण में उतारे बिना कोरे प्रवचन तो ग्रामोफोन के रिकार्ड के समान होते हैं, पर वे रिकार्ड गुरू नहीं बन सकते। तब तक प्रवचलन में से लौट रहे पांच–दस आदमी वहां जमा हो गए थे। उन्होंने देखा कि बालक प्रणाम करके गोस्वामीजी से कह रहा था– 'गुरूदेव! मुझमें किंचित् भी मानवता है, तो वह आपके प्रवचन का ही प्रताप है।'

'नहीं–नहीं, बेटे! बालक को आशीर्वाद देते हुए गद्‌गद् कण्ठ से गोस्वामी जी कह रहे थे– मैं तो प्रवचनों का रिकार्ड मात्र हूं, केवल बोलता हूं, पर उन्हें आचरण में उतार नहीं सका। तुमने ज्ञान को अपने व्यवहार में उतारा है, इसलिए तुम्हीं सच्चे गुरू हो।'

दिन में दीपक और मीठे की जगह नमकीन

संत कबीर रोज सत्संग किया करते थे। दूर–दूर से लोग उन्हें सुनने आते थे। एक दिन सत्संग खत्म होने के बाद भी एक आदमी बैठा रहा। कबीर ने इसका कारण पूछा, तो वह बोला, मुझे आपसे कुछ पूछना है। मैं गृहस्थ हूँ। घर में सभी लोगों से मेरा झगड़ा होता रहता है। आखिर इसकी वजह क्या है और यह कैसे दूर हो सकता है ?

कबीर थोड़ी देर चुप रहे, फिर उन्होंने अपनी पत्नी से कहा, दीपक जलाकर लाओ। हालांकि उस समय भरी दोपहरी थी, फिर भी कबीर की पत्नी दीपक जलाकर ले आयीं। वह आदमी भौंचक देखता रहा। वह सोचने लगा कि दोपहर में कबीर ने दीपक क्यों मंगवाया ? थोड़ी देर बाद कबीर ने फिर पत्नी को पुकारा और बैठे–बैठे ही बोले, कुछ मीठा दे जाना। इस बार उनकी पत्नी मीठे के बजाय नमकीन देकर चली गई।

उस आदमी ने सोचा कि यह तो अलबेला घर है। यहाँ मीठा के बदले नमकीन दिया जा रहा है, और दिन में दीपक जला रहे हैं। वह बोला, कबीर साहब, मैं चलता हूँ। कबीर ने पूछा, आपको अपनी समस्या का समाधान मिला या संशय अब भी बाकी है ? वह बोला, मेरी समझ में कुछ नहीं आया। कबीर ने उसे समझाते हुए कहा, जैसे मैंने भरी दोपहरी में दीपक मंगाया, तो मेरी पत्नी कह सकती थी कि तुम क्या सठिया गए हो। भला दोपहर में दीपक की क्या जरूरत ? लेकिन नहीं, उसने सोचा कि जरूर किसी काम के लिए दीपक मंगाया होगा। इसके बाद मैंने मीठा मंगवाया, तो वह नमकीन देकर चली गयीं। हो सकता है कि घर में कोई मीठी वस्तु न हो, यह सोचकर मैं चुप रहा। इसमें तकरार क्या ? आपसी विश्वास बढ़ाने और विवाद में न फंसने से विषम परिस्थिति अपने आप दूर हो जाती हैं।

रूद्राक्ष का महत्व

– स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती, वृन्दावन

रूद्राक्ष बहुत पवित्र फल माना गया है। रूद्राक्ष का वनस्पति (वृक्ष) नेपाल के क्षेत्र में अधिक पाये जाते हैं। रूद्राक्ष को शिव का वरदान भी कहते हैं। यह मोक्ष का प्रतीक भी है। रूद्राक्ष प्राकृतिक देन है, जो मानव जीवन की आध्यात्मिक सफलता, भौतिक सफलता एवं शारीरिक चिकित्सा इन तीनों क्षेत्रों के लिये काम आता है। आजकल नकली रूद्राक्ष अधिक मिलते हैं। अतः असली–नकली रूद्राक्ष की पहचान करके ही इसे इस्तेमाल करें। एकमुखी रूद्राक्ष सबसे अधिक श्रेष्ठ, लाभदायक एवं दुर्लभ माना गया है। यह एकमुखी रूद्राक्ष बहुत ही कम मिलता है। कहते हैं कि एकमुखी रूद्राख पेड़ में एक ही होता है। यश, कीर्ति, पद–प्रतिष्ठा सफलता का द्योतक कहा गया है। जो रूद्राक्ष का व्यापार करते हैं उसमें दस प्रतिशत ही श्रेष्ठ सत्य व्यापारी हैं जो एकमुखी सही रूद्राक्ष दे सकते हैं, जो एकमुखी सही रूद्राक्ष दे सकते हैं, मगर जो नब्बे प्रतिशत रूद्राक्ष बनाकर देने का कार्य करते हैं, वे एकमुखी रूद्राक्ष को बाजार में सब्जी–भाजी के मोल पर बेचते हैं और किसी भी फल या बेर आदि में एक धारी बनाकर उसे एक मुखी की तुलना देते हैं। दो मुखी या पंचमुखी रूद्राक्ष की सारी धारियाँ चिपकाने वाले पदार्थ से भरकर केवल एक ही धारी छोड़कर उसे एकमुखी बताकर ठग कार्य चला रहे हैं।

रूद्राक्ष कैसे पहचानें ?– असली या नकली रूद्राक्ष की पहचान बड़ी ही सरलता से की जा सकती है। यदि हम एक बर्तन में पानी लेकर रूद्राख को उसमें डालें तो जो रूद्राक्ष असली होगा वह पानी के अन्दर डूब जायेगा और जो रूद्राक्ष नकली होगा, वह पानी के अन्दर नहीं डूबेगा वह तैरता ही रहेगा। तैरने वाला हल्का रूद्राक्ष नकली होता है। इसके अलावा अन्य भी परीक्षा की जाती है, वह परीक्षा सामान्य जन कम और विशेषज्ञ ही कर सकते हैं।

रूद्राक्ष के मुख की पहचान– रूद्राक्ष के ऊपर जो भी धारियाँ उसके एक ध्रुव तक बनी होती हैं एक छिद्र से दूसरे छिद्र तक ये खड़ी धारियाँ ही रूद्राक्ष के मुख कहलाती हैं। रूद्राख कितने मुख का इन धारियों को गिनकर ही रूद्राक्ष को उतना मुखी घोषित किया जाता है। यदि उस रूद्राक्ष पर एक धारी है तो एकमुखी कहलायेगा और रूद्राक्ष फल पर दो धारियाँ हैं तो दोमुखी कहलायेगा। इस प्रकार से 14 मुखी तक के ये रूद्राक्ष देखने में आते हैं। मगर पाँच मुखी रूद्राक्ष सबसे अधिक प्रचलन में हैं। यह काफी सस्ता होने से इसकी मालायें लोग पहनते हैं।

कौन सा रूद्राक्ष किस ग्रह का है– एकमुखी रूद्राक्ष जो बहुत ही श्रेष्ठ दुर्लभ माना गया है, वह सूर्य का है और दो मुखी रूद्राक्ष चन्द्रमा का है। चन्द्रमा मन, मस्तिष्क का स्वामी होता है। दो मुखी रूद्राक्ष मस्तिष्क की शक्ति ऊर्जा बढ़ाने हेतु पहना जाता है। विद्यार्थी के लिये कम्पटीशन में भाग लेने के लिये शुभ रहता है। तीन मुखी रूद्राक्ष मंगल ग्रह का है। चार मुखी बुध का है, पांच मुखी गुरू का रूद्राक्ष है। 6 मुखी रूद्राक्ष शुक्र ग्रह का माना गया है। 7 मुखी शनि का रूद्राक्ष है। 8 मुखी राहु का है और 9 मुखी केतु का रूद्राक्ष है। 8 मुखी शनि के आठ अंक के कारण और राहु शनि का अधिमित्र होने के कारण राहु और शनि दोनों का यह 8 मुखी रूद्राक्ष माना गया है। 9 मुखी से अधिक के जो भी रूद्राक्ष होते हैं, उन्हें विभिन्न प्रकार की सफलता एवं कार्यसिद्धि के लिये कभी–कभी धारण किया जाता है। आठ मुखी रूद्राक्ष का नम्बर दूसरे क्रम में दुर्लभता के आधार पर माना गया है। शनि की

साढ़े साती में 8 मुखी के पांच रूद्राक्ष काले धागे में पहनना शुभफलदायक होता है। रूद्राक्ष और ग्रह से उसके सम्बन्ध को एक तालिका द्वारा समझा जा सकता है और कौन से रूद्राक्ष कौन सी राशि वाले को पहनना चाहिये या किस आवश्यकता के लिये पहनना चाहिये। यह देखना अनिवार्य होता है। रोगों की चिकित्सा में ग्रह दोष द्वारा उत्पन्न कष्ट की शांति के लिये रूद्राक्ष का धारण करना लाभदायक सिद्ध होता है। इसलिये अक्सर राशिफल विचार में दिया होता है कि आप पर शनि का समय चल रहा है आप पंचमुखी रूद्राक्ष पहनें।

ग्रहों के नाम	कितना मुखी रूद्राक्ष	आवश्यकता	कौन से रोगों के निवारण हेतु
सूर्य	एकमुखी	यश, कीर्ति, पद–प्रतिष्ठा, सफलता प्राप्ति हेतु	नेत्र, कर्ण, नाक, जौभ, दत, अस्थि रोग, हृदय रोग निवारण
चन्द्रमा	दो मुखी	मानसिक उर्जा, शिक्षा हेतु	मनोरोग, मिरगी, अस्थमा, दमा, हिस्टीरिया, ठण्डी से होने वाले रोगों के लिए
मंगल	तीन मुखी	व्यापार, पराक्रम, विजयी होने, आत्मविश्वास	ब्लड प्रैशर, भय, आत्मविश्वास की कमी का दोष
बुध	चार मुखी	वाणी लाभ, व्यापार लाभ	त्वचा , गले सम्बन्धी, वाणी दोष हेतु
गुरू	पाँच मुखी	विवाह, शिक्षा, संतान हेतु	पीलिया, पेट की शिकायत, संतति दोष हेतु
शुक्र	छः मुखी	गृहस्थी न निभना, सौन्दर्य प्राप्ति, वैभव	गुप्त रोग, स्त्री जन्य रोग, प्रजनन सम्बन्धी रोग
शनि	सात मुखी	शनि साढ़े साती, ढैय्या, दशा की शांति, विजय व न्याय प्राप्ति, धर्म कार्य में सफलता	वात, संधिवात, शुगर, लकवा, किडनी रोग, दाहिनी पीड़ा, वायु रोग निवारण हेतु
राहु	आठ मुखी	राजनैतिक, सामाजिक सफलता	ऊपरी बाधा, त्वचा रोग, कुण्ठ
केतु	नौ मुखी	सफलता, शत्रु पर विजय हेतु	ऐड़ी का दर्द, कैंसर, कुष्ठ रोग

संसार के समस्त जीवों में केवल गाय ही ऐसा प्राणी है, जिसका बच्चा पैदा होते ही "माँ" शब्द का उच्चारण करता है। सारे संसार को माँ शब्द गौवंश से ही मिला है। गाय के बछड़े को संस्कृत में वत्स कहा है। माँ को ममता के लिए प्रचलित शब्द "वात्सल्य" इसी वत्स शब्द से बना है। –पू0 नागा बाबा– श्री सर्वेश्वर गौशाला मांट, मथुरा

हिन्दुओं का महत्वपूर्ण तीर्थ– नैमिषारण्य

– **बृजकिशोर गोस्वामी,** कारसेवकपुरम, अयोध्या

नैमिष शब्द का तात्पर्य– नैमिषारण्य संज्ञा दो भागोकं में, 'नैमिष' + 'आरण्य' शब्दों के योग से बना है।

यह नैमिष शब्द वेद से सम्बन्ध रखने वाला है। अथर्ववेद दशम् मण्डल यजुर्वेद 23 वें अध्याय तथा 25वें अध्याय के, 11 वें मंत्र में निमिष व निमेष शब्द का उल्लेख प्राप्त होता है। यहां पर निमिष शब्द का प्रयोग ब्रह्मस्वरूप परमात्मा का संसार को प्रकाशित करने वाली चेष्टा को व्यक्त करने के लिए किया गया है।

पुराणों में प्रसंग वश भिन्न–भिन्न स्थानों पर नैमित्र को व्यक्त करने के लिए विभिन्न कथाएं प्राप्त होती हैं, जिनमें कुछ निम्न हैं:–

1– विश्व सृजन की इच्छा से ब्रह्मा जी यज्ञ करना चाहते हैं। इस यज्ञ के यजमान स्वयं ब्रह्मा एवं इला नाम की उनकी पत्नी थीं। यज्ञार्थ पवित्र भूमि हेतु विष्णु भगवान से प्रश्न किया। भगवान विष्णु ने एक दिव्य चक्र दिखाते हुए कहा कि जहाँ इस चक्र की नेमिशीर्ण हो जाए, वही यज्ञ भूमि होगी। ब्रह्मा जी ने उस चक्र का अनुसरण करते हुये जिस स्थान पर चक्र की नेमिशीर्ण होते देखी उसे ही नैमिषारण्य नाम से पुकारा। उस प्रसंग में नैमिषारण्य की स्थिति को बताते हुए व्यक्त किया है। यह पवित्र अरण्य गोमती नदी के तट पर है।

2– पद्म पुराणोत्तर कथा प्रसंग में नैमिषारण्य को व्यक्त करते हुए लिखते हैं–

एक बार प्रयाग के संगम स्थल पर ऋषि मनियो ने भगवान विष्णु को प्रसन्न कर उनसे स्वाध्याय द्वारा परमात्मा की प्राप्ति के उद्देश्य से फल देने वाले पवित्र स्थान को जानना चाहा। भगवान विष्णु ने उन महर्षियों को अपना दिव्य चक्र दिखाते हुए कहा कि इसका अनुसरण कर देखो जहाँ इसकी नेमिशीर्ण हो, उस स्थान को उपयुक्त समझो। आदेशानुसार ऋषिगण अनुसरण करते चले, जिस स्थान पर चक्र की नेमिशीर्ण होती देखी, उसको नैमिषारण्य नाम से पुकारा।

यह स्थान अत्यन्त पवित्र आदरणीय तप ज्ञान, यज्ञादि शुभ कर्मों की पावन भूमि रूप में सदैव से वैष्णव, शैव, रामानुज आदि सगुण निर्गुण उपासकों तथा जन साधारण की दर्शनीय वन्दनीय एवं पुनीत कर्म स्थली रही है। यहाँ से स्वाध्याय तप, ज्ञानादि द्वारा अनेक बार ऋषियों व महापुरूषों से परमात्म योग को प्राप्त किया। इसी कारण यह महान तीर्थ है। इसी तीर्थ की महिमा का प्रदर्शन करने वाली कुछ पुराणोक्तियां निम्न हैं:–

1.नैमिषारण्य परम तीर्थ है यह भोग और मोक्ष प्रदान करने वाला है **(अग्नि पुराण)**
2.नैमिषारण्य पुण्य दायक क्षेत्र है। **(गरूड़ पुराण)**
3.नैमिषारण्य मुक्तिदायक क्षेत्र है। **(गरूड़ पुराण)**
4.नैमिषारण्य में शरीर छोड़ने वालों को नरक नहीं भोगना पड़ता। **(स्कन्द पुराण)**
5.नैमिषारण्य तीर्थ में स्नान करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है। **(महाभारत)**
6.पृथ्वी में जितने तीर्थ हैं सभी नैमिषारण्य में विद्यमान हैं। जो यहाँ स्नान कर नियमित भोजन करता है वह कुल की सात पीढ़ियों का उद्धार कर देता है।
7.यहाँ पापों का दूर करने वाले 30 हजार तीर्थ हैं। **(वा0 पुराण)**

8.यह नैमिषारण्य तीर्थ त्रैलोक्य विख्यात महापातकों का नाश करने वाले महादेव को प्रिय है। यहाँ तप, दान, श्राद्ध, योग करने से सात जन्म के पाप छूट जाते हैं। (कर्म पुराण)

नैमिषारण्य स्थित चक्र तीर्थ महात्म्य–

भगवान विष्णु ने देवासुर से युद्ध में चक्र द्वारा अनेक असुरों का वध किया। पश्चात् चक्र को शुद्ध करने हेतु 8 करोड तीर्थों को एक स्थान पर एकत्र कर उसमें प्रक्षालित कर शुद्ध किया और चक्र की स्मृति में इसका नाम चक्रतीर्थ रखा तथा कहा कि यहाँ स्नान करने से सब तीर्थों के स्नान का फल प्राप्त होगा। विशेषकर एकादशी व चन्द्र–सूर्य ग्रहण के काल में स्नान करने से सब तीर्थ के स्नान का फल प्राप्त होगा। विशेषकर एकादशी व चन्द्र–सूर्य ग्रहण में स्नान करने से करोडों यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

श्री चक्रतीर्थ में स्नान दान का फल–

1. यहाँ चक्रतीर्थ में स्नान करके मनुष्य सब प्रकार के पापों से छूट कर सहस्त्रों वर्ष तक स्वर्ग में ही वास करते हैं।
2. श्री चक्रतीर्थ में स्नान कर भगवान विष्णु के दर्शन कर यथाशक्ति दान करता है वह इन्द्र के समय तक निष्पाप होकर बैकुण्ठ वास करता है **(स्कन्द पुराण)**
3. कलियुग में सभी तीर्थ कलिमय मय हें, किन्तु चक्रतीर्थ महातीर्थ है। यह सभी पापों को दूर करने वाला है, इसके स्नान करने से अनेक पातक दूर होते हैं तथा ग्रह जनित पीड़ायें भी शान्त होती हैं। **(योगिनी तन्त्र)**
4. नैमिषारण्य में श्री चक्रतीर्थ के नहाने से सांसारिक बाधायें दूर होती हैं। **(महाभारत)**
5. नैमिषारण्य में मेष राशि पर सूर्य बृहस्पति के होने से स्नान करने व पूजन पाठ करने से ब्रह्मलोक प्राप्त होता है। **(शिव पुराण)**

नैमिषारण्य में स्थिति दर्शनीय स्थान

भूतनाथ मन्दिर–

एक बार दैत्य प्रबल होकर देवताओं को सताने लगे। देवताओं ने रक्षा हेतु भगवान विष्णु से प्रार्थना की। श्री विष्णु ने कहा भगवान शंकर को प्रसन्न कर चक्र प्राप्त करो। देवता लोग नैमिष आकर भगवान शंकर की प्रसन्नता हेतु तपस्या की। भगवान शंकर श्री भूतनाथ स्वरूप से प्रकट होकर स्वयं मुख से चक्र को निकालकर एवं अनेक तीर्थों के जल से आच्छादित कर भगवान विष्णु को प्रदान कर दिया तथा भगवान विष्णु ने निमिष मात्र में दैत्यों का वध किया। श्री चक्रतीर्थ पर प्रकट विग्रह भूतनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुआ, इनकी पूजा करने से सभी प्रकार की पीड़ा शान्त होती है।

श्री गोकर्ण नाथ महादेव–

श्री चक्रतीर्थ पर ही आगनेय कोण में श्री गोकर्ण नाथ महादेव का स्थान है, इसमें पार्वती परमेश्वर सिद्धि विनायक काल भैरव आदित्य भगवती भद्रकर्णी महाकाल व गौरी के दर्शन होते हैं। शक्ति यामल में लिखा है कि नैमिषारण्य में गोकर्ण शीघ्र सिद्धि देने वाली है।

श्री राम धाम–

अश्मेघ घाट स्थित इसी स्थान पर तीर्थ भ्रमण के उद्‌देश्य से आये श्री रामजी के ठहरने का उल्लेख प्राप्त होता है। यहाँ नैमिष में भगवान राम के आने का उल्लेख विभिन्न ग्रन्थों के आधार पर प्रायः तीन बार प्राप्त होता है, प्रथम विद्यालय के बाद राजा दशरथ से भी अनुमति प्राप्त कर। द्वितीय राज्याभिषेक के उपरान्त देख–रेख हेतु और तृतीय अश्वमेघ यज्ञार्थ नैमिषवास।

श्री श्रंगी ऋषि आश्रम–

श्री चक्रतीर्थ के पूरब में श्री श्रंगी ऋषि जी की समाधि है। यह वही श्रंगी ऋषि हैं, जिनके पदार्पण मात्र

से रोम पाद नृप के राज्य का अकाल सुकाल में बदल गया था। सन्तान से निराश राजा दशरथ को इन्हीं ऋषि ने पुत्रेष्टि यज्ञ कराया था। इसी यज्ञ के फलस्वरूप दशरथ को राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न जैसे पुत्र प्राप्त हुए।

श्री तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में लिखा है–

'श्रंगी ऋषिहिं वशिष्ठ बुलावा। पुत्र हेतु शुभ यज्ञ करावा।।

इस स्थान पर पूर्णिमासी तिथि को हवन करने से सौभाग्य बढ़ता है तथा सन्तान प्राप्त होती है।

पिप्लादि मुनि–

समीप ही पीपल का लघु वृक्ष है। इसी स्थान पर दधीचि मुनि की पत्नी सद्योजात शिशु को छोड़कर पति के साथ सती हो गई थी। यही बालक पीपल की गदिया खाकर बड़ा हुआ। इसी कारण इसका नाम पिप्पलादि भी हुआ।तीर्थ के दक्षिण–पश्चिम भाग में गायत्री आदि तपेश्वर चक्र नारायण, गणेश जी, ब्रह्म जी, राधा कृष्ण आदि के मन्दिर दर्शनीय है।

गोमती स्नान महिमा–

श्री चक्रतीर्थ के पश्चात् गोमती के स्नान का महत्व है। स्कन्द पुराण में लिखा है–

श्री गोमती व चक्रतीर्थ में एक दिन भी स्नान करने से कलियुग में त्रैलोक्य के तीर्थ स्थान का फल प्राप्त होता है। तीनों लोकों के पवित्र तीर्थ श्री चक्रतीर्थ और गोमती में स्थित है।

ललिता देवी मन्दिर–

इस महान स्थान नैमिषारण्य में संसार रूप विश्व शरीर को धारण करने वाली लिंग धारिणी भगवती ललिता भाव में स्थित है। यहाँ भगवती सती का अंग गिरने से यह 108 पीठों में से एक प्रधान सिद्ध पीठ है। तन्त्र ग्रन्थों में इसे उड्डियन पीठ के नाम से व्यक्त किया है। श्री चक्रतीर्थ में स्नान कर श्री ललिता देवी की पूजा करने से सहस्त्रों अश्वमेघ यज्ञ का सा फल प्राप्त होता है, इच्छित मनोरथ पूर्ण होते हैं।

प्रजापति दक्ष का नैमिषारण्य आगमन–

प्रजापति पद प्राप्त करने के बाद दक्ष तीर्थ हेतु नैमिष आए। यहाँ पर देवताओं ने उन्हें सम्मानित करने हेतु एक सभा आयोजित की, जिसमें सभी देव एकत्रित थे। भगवान शंकर दक्ष के आने पर खड़े नहीं हुए इसी कारण दक्ष ने अपमान भाव से द्वेष मानते हुए कनखल यज्ञ में शंकर को भाग लेने को निमन्त्रण नहीं दिया।

नारद जी की नैमिष यात्रा–

श्री शैलेष रूप शिव जी के दर्षन करते नारद जी नैमिषारण्य आये, यहाँ ऋषियों के मध्य स्थित होकर लिंग पुराण की कथा का प्रचार किया।

भगवान राम की नैमिष यात्रा–

1. सर्वप्रथम विद्याध्ययन के बाद भगवान राम दशरथ से आज्ञा लेकर तीर्थ भ्रमण दौरान नैमिषारण्य आये।
2. पुनः अभिषेकोपरांत राज्य व्यवस्था का निरीक्षण करते समय मध्य में पड़ने वाले तीर्थों का दर्शन करने नैमिषारण्य आये।
3. पुनश्च ब्रह्महत्या दोष निवारणार्थ अश्वमेध यज्ञ करने नैमिषारण्य आए। इसी यज्ञ में परित्यक्ता सीता प्रच्छन रूप ने बाल्मीकि मुनि के साथ आई। बालक लवकुश ने बाल्मीकि रामायण का गान किया। भगवान राम ने उन्हें मुनि द्वारा स्वपुत्र जानकर स्वीकार किया। भगवती सीता को अपनाने से पहले शुद्धता की परीक्षा चाही। भगवती सीता माँ ने धरित्री को साक्षी मानते हुए कहा कि यदि मैं शुद्ध हूँ तो मुझे अपने यहाँ स्थान दे। देखते देखते धरती फट गई। माँ अपने चरित्र को उज्जवल कर धरती

मध्य समाती चली गई। इस स्थान पर आज भी जानकीकुण्ड नामक तीर्थ माँ की स्मृति में स्थित है।

पाण्डवों की यात्रा–

वनवास के काल में जिस समय अर्जुन पाण्डवों से अलग होकर भगवान शंकर को प्रसन्न कर अस्त्र प्राप्त करने चले गये थे, उस समय युधिष्ठिर पाण्डव चित्त, शान्त्यार्थ लोमज्ञ ऋषि के उपदेशानुसार तीर्थ करते नैमिषारण्य आए तथा वहीं वास किया।

व्यासगद्दी–

वेदव्यास मुनि का आगमन व पुराण रचनात्मक पर्यटन करते हुए व्यास जी पितृ भूमि नैमिष पधारे, यहाँ रहकर तीर्थ स्नान किया, नित्य कर्म से निवृत होकर बैठे ही थे कि अचानक ही उन्हें अलौकिक ज्ञान का भास हुआ। उन्हें प्रतीत हुआ कि युग के प्रभाव में मनुष्य की सामर्थ्य घटती जा रही है, मनुष्य श्रद्धाहीन हो रहे हैं आयु में कमी हो रही है। बुद्ध बल भी शिथिल हो रहा है। इन सभी बातों का विचार कर अल्पज्ञ मनुष्यों के हितार्थ पुराणों की रचना की, यह स्थान आज भी व्यास गद्दी के नाम से प्रसिद्ध है।

सूतजी का पुराण प्रचार–

व्यास रचित पुराण कथाओं का श्री सूत जी इसी स्थान से विश्व में प्रचारित किया। जहाँ से सूत जी ने पुराण कथाओं का प्रचार किया। वह स्थान सूति गद्दी के नाम से जाना जाता है। सत्संग तप हेतु 88 हजार ऋषियों का आना शौनक प्रमुख 88 हजार ऋषियों ने भगवान ब्रह्मा से पवित्र तीर्थ स्थान नैमिष का जानकर यहाँ आये। हजारों वर्षों तक चलने वाले सत्संग सत्र पुराण कथाओं द्वारा भगवान् के निर्मल तत्व का श्रवण दर्शन कर सद्गति प्राप्त की। वर्तमान काल में श्री चक्रतीर्थ पर ऋषि सत्संग चलता है।

सवा कोसी परिक्रमा के दर्शनीय स्थान–

श्री चक्रतीर्थ, श्री भूतनाथ, श्री हनुमान जी, श्री श्रंगी ऋषि, श्री राम धाम, श्री गोकर्णनाथ जी, श्री गायत्री जी, श्री नारायण जी, श्री चक्रनारायण जी, श्री गणेश जी, श्री राधा–कृष्ण। सूत गद्दी, काशी कुण्ड, अन्नपूर्णा, विश्वनाथ, चित्रगुप्त, लोलार्क कूप, व्यास गद्दी, मनु सतरूपा, ब्रह्मवर्त, गोमती, गंगोत्री, अश्वमेघ घाट, हनुमान गढ़ी, पंच पाण्डव, पुराण मन्दिर, रामानुज कोट।

श्री ललिा देवी, पंच प्रयाग, क्षेम काया एवं जानकी कुण्ड। यह नैमिषारण्य पृथ्वी पर आठवाँ बैकुण्ठ है, यहाँ मोक्ष देने वाली सातों पुरी विद्यमान है। मोक्षदायी अरण्यों में यह प्रमुख अरण्य है।

चौरासी कोस की परिक्रमा व स्नान–

नैमिषारण्य के सम्पूर्ण तीर्थों की परिक्रमा फाल्गुन मास में होती है। फाल्गुन कृष्ण अमावस को श्री चक्रतीर्थ जी में स्नान करके फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा से यह परिक्रमा प्रारम्भ होती है। नैमिषारण्य की चौरासी कोस परिक्रमा का **वर्णन अगले अंक में।**

गाय का गोबर मल नहीं– मलशोधक है

गाय के गोबर में लक्ष्मी का वास है। दीपावली को गाय की एवं दूसरे दिन गोबर (गोवर्धन) की पूजा की जाती है। ईधन खाद से भी अधिक घरों की लिपाई हेतु गोबर का महत्व है। पवित्रता का प्रतीक है। विदेशों में हुए वैज्ञानिक प्रयोगों से सिद्ध भी हो चुका है कि "जिन घरों में गोबर की लिपाई होती है, उनमें परमाणु विकिरण या रेडियो धर्मिता का दुष्प्रभाव नहीं होता।

स्मार्टफोन बच्चों के लिए कितना घातक ?

देर रात तक मोबाइल फोन पर टाइपिंग करना, वीडियो देखना, गेम्स खेलना या ऑनलाइन रहना, यह समझने के लिए काफी है कि हम किस कदर स्मार्टमान के आदी हो रहे हैं। बच्चों में ऐसे मामले तेजी से बढ़े हैं।

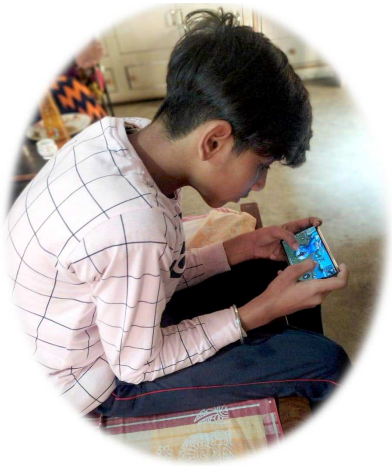

बच्चों पर पड़ता है ये असर–

(1)मोबाइल फोन पर ही लगे रहना। पढ़ाई व दूसरे कामों में रूचि न लेना। (2) बैटरी खत्म होने या नेटवर्क जाने पर बेचैन और क्रोधित होना। (3) मोबाइल फोन की बजह से करीबियों से बातचीत और संपर्क रखने में हिचकिचाहट होना। (4) परीक्षा में अंक कम आना। (5) नींद में कमी आना। (6) खाने–पीने का ध्यान न रखना। (7) आंखो मे जलन व दर्द की शिकायत करते रहना।

बड़ो में दिखते हैं कुछ लक्षण–

आक्रामकता बढ़नाः कुछ देर फोन छोड़ने पर गुस्सा आने लगना, चिड़चिड़ाहट बढ़ना। क्रोध की अधिकता उन बच्चों में अधिक होती है, जो हिंसक खेल खेलने में ज्यादा समय बिताते हैं।

एकाग्रता घटनाः देर तक फोन पर गेम खेलते रहना और सोशल मीडिया पर एक्टिव रहना एकाग्रता को कम कर रहा है। जिसके कारण एक काम को देर तक करने या लगातार पढ़ाई करने में दिक्कत होती है। बे–ध्यानी में होने वाली दुर्घटनाएं भी बढ़ी हैं।

सुनने में दिक्कतः लगातार तेज आवाज में हेडफोन लगाकर सुनना कानों के अंदरूनी हेयर सेल्स को नुकसान पहुंचा सकता है। यही सेल्स आवाज को संकेत में बदलकर दिमाग तक पहुंचाते हैं। इसमें गड़बडी आने पर सुनने में दिक्कत होने लगती है। कम देर के लिए कम आवाज में ही सुनें।

टेक्स्ट क्लॉः लगातार फोन पकड़े रहने और स्क्रीन पर उंगलिया चलाने से कलाई व उंगलियों में झनझनाहट की समस्या बढ़ी है चिकित्सकीय भाषा में इसे टेक्स्ट क्लॉ कहते हैं। गेम खेलने के दौरान एक ही तरह की एक्टिविटी देर तक करना कलाई व बाजुओं में दर्द पैदा करता है। मोटर न्यूरॉन सिस्टम पर भी इसका असर पड़ता है।

फैंटम वाइब्रेशन सिंड्रोमः लगातार यह एहसास होना कि फोन बज रहा है, जबकि ऐसा होता नहीं है। इस तरह ध्यान फोन पर ही लगा रहता है।

टेक्स्ट नेकः फोन पर ज्यादा टाइपिंग से गर्दन में आई समस्या को टेक्स्ट नेक का नाम दिया गया है। यह कंधे, गर्दन, सिर और रीढ़ में दर्द का कारण बन रहा है।

नींद की कमीः देर रात तक फोन स्क्रीन देखना, ऑनलाइन एक्टिव रहना नींद की कमी के अलावा नींद की गुणवत्ता पर असल डाल रहा है। फोन की तेज रोशनी मेलाटोनिन के बनने पर असर डालती है, जो **नींद लाने में मदद करता है**

नोमोफोबियाः यह ऐसा डर है, जिसमें फोन के बिना होना व्यक्ति में बेचैनी पैदा करता है। इसके साथ ही उदासीनता व दूसरों से अलग रहना, आक्रामता आदि विचार भी ऐसे लोगों में बढ़ते हैं।

कैसे करें लत दूर अन्य नशों की तरह मोबाइल एडिक्शन का भी उपचार संभव है। दृढ़ निश्चय बनाकर इस लत को छोड़ने की कोशिश करें। मोबाइल का इस्तेमाल कब और कितनी देर करेंगे, इसका समय तय करें। कुछ समय के लिए इंटरनेट बंद करके रखें। प्रत्येक गतिविधि जैसे सोशल मीडिया,

टेक्सटिंग, गेमिंग या वीडियो, देखने के लिए एक समय निश्चित करें। उसी समय फोन देखें और दूसरों के जवाब दें।

अधूरे कामों को पूरा करने में समय लगाएं। दूसरे पंसदीदा कामों जैसे पेंटिग, डांस, व्यायाम, योग व बाहरी खेलों में अपना समय लगाएं। फोन रखने की जगह बदल दें। फोन को इतना दूरी पर रखें कि आसानी से उस तक हाथ न पहुँचे। नोटिफिकेशन्स बंद कर दें। इससे बार–बार फोन देखने की बेचैनी नहीं होगी। सुबह उठने के कुछ समय बाद तक और रात को सोने से कुछ समय पहले फोन देखना या उसका इस्तेमाल करना छोड़ दें। परिवार संग समय बिताएं। करीबियों से ऑनलाइन बातचीत की बजाय मिलकर बात करें। अपने दम पर मोबाइल की लत नहीं छोड़ पा रहे हैं तो मानसिक रोग विशेषज्ञ की मदद लें।

साभार, हिन्दुस्तान समाचार पत्र। 6 दिसम्बर 2019

मोबाइल के कारण छात्रों को नहीं मिल पा रहे अच्छे अंक

मोबाइल फोन की लत से यूनिवर्सिटी में पढ़ने वाले छात्रों को अच्छे अंक नहीं आ रहे और वे परीक्षाओं में फेल हो रहे हैं। एक हालिया शोध में यह खुलासा हुआ है। यूनिवर्सिटी ऑफ घेंट 700 छात्रों के मोबाइल फोन प्रयोग करने की आदतों की निगरानी की गई और इसकी उनके परीक्षाओं के अंक से तुलना की गई। शोधकर्ताओं ने पाया कि एक घंटे की लेक्चर के दौरान जिन छात्रों में पांच बार या उससे ज्यादा अपनी फोन की स्क्रीन में देखा उनकी परीक्षाओं के अंक में पांच फीसदी की कमी दर्ज की गई। उनके अंकों की तुलना उन छात्रों से की गई, जिन्होंने पढ़ाई के दौरान मोबाइल फोन का इस्तेमाल नहीं किया। शोध के अनुसार, पढाई के दौरान छात्रों ने समय देखने के लिए, सोशल मीडिया का प्रयोग करने के लिए, इंटरनेट का प्रयोग करने के लिए और गेम खेलने के लिए किया। परीक्षाओं में कम अंक आने का संबंध परीक्षा में फेल होने से भी पाया गया? शोध में पाया गया कि जो छात्र पढ़ाई के दौरान आठ फीसदी समय तक फोन देखते थे उनके उत्तीर्ण होने की दर 60.6 फीसदी थी। वहीं, फोन न देखने वालों में यह दर 68.9 फीसदी पाई गई। शोधकर्ता प्रोफेसर स्टिज बर्ट ने कहा, जो छात्र यूनिवर्सिटी में मोबाइल फोन का अत्यधिक इस्तेमाल करते हैं वे परीक्षा में सबसे खराब प्रदर्शन करते हैं। फोन का औसत इस्तेमाल करने वालों में फोन का इस्तेमाल कम करने वालों की तुलना में 20 अंकों की परीक्षा में 1.1 फीसदी अंक कम आए।

फोन पर व्यस्त रहने से छात्रों को नुकसान– **शोध के लिए जिन 700 छात्रों का चयन किया गया था, वे सभी नए छात्र थे। उनसे एक प्रश्नोत्तरी भरवाई गई, जिसमें उनसे प्रतिदिन मोबाइल के प्रयोग की जानकारी मांगी गई। इसके अलावा कक्षाओं और पढ़ाई के दौरान भी मोबाइल के प्रयोग की जानकारी मांगी गई। जर्नल केकलॉस में प्रकाशित शोध में शोधकर्ताओं ने लिखा, छात्रों ने कक्षाओं के दौरान औसतन 4.49 बार फोन देखा और पढ़ाई करते समय 3.19 बार फोन देखा। अत्यधिक फोन प्रयोग करने वाली श्रेणी में मौजूद छात्रों ने पांच से ज्यादा पर फोन देखा। शोधकर्ताओं के अनुसार पढ़ाई के दौरान फोन पर ज्यादा व्यस्त रहने से उन छात्रों को सबसे ज्यादा नुकसान होता है जिनके पिता ज्यादा शिक्षित हैं।**

सोरायसिस की सफल चिकित्सा

– पुष्पनाथ मिश्र, आयुर्वेदाचार्य
मुख्य चिकित्सक, दातक औषधालय, रामनगर, अजमेर

सामान्यतः सोरायसिस सीलन भरे क्षेत्रों में अधिक होता है, लेकिन अब यह सर्वत्र देखा जाता है। स्त्रियों की अपेक्षा पुरूषों में यह अधिक होता है, आधुनिक चिकित्सा में इसे वंशानुगत रोग माना है।

रोग लक्षण– शरीर के किसी भी भाग में मसूर के दाने के बराबर उभार सा बन उस पर सफेद मुसी अथवा छिलका सा बनकर गिरता रहता है अथवा धीरे–धीरे बढ़े होते–होते सम्पूर्ण शरीर पर हो जाते हैं। कई बार रोग RINGS आकार में भी फैलता है, त्वचा पर बने उभार प्रायः रक्तवर्ण के, गहरे ब्राउन और कभी–कभी मटमेले भी होते हैं। चकत्तो के ऊपर मछली के छिलकों की तरह चमकदार छिलकों का रहना आवश्यक व पक्का लक्षण है।

कारण– सोरायसिस क्यों उत्पन्न होता है, इसका कारण क्या है, अभी तक इस विषय में कोई निश्चय नहीं हो सका है।

चिकित्सा–

पंचतिक्त घृत गुग्गुल–	2–2 गोली प्रातः सांय जल के साथ लें।
निम्बादि चूर्ण–	3–3 ग्राम सुबह–सांय भोजन के बाद जल के साथ लें।
महामजिष्ठादि क्वाथ–	10 मिली भोजनोपरान्त बराबर का जल मिलाकर
चर्मरोगादि तैल–	स्नान के बाद सम्पूर्ण शरीर पर मालिश करें।

निम्बादि चूर्ण– नीम छाल, गिलोय, हरड छिलका, आंवला बावची प्रत्येक 100–100 ग्राम वाडविडंग, चक्रमर्द, अजवायन, वच, सफेद जीरा, कुटकी, खैर, सेंधा नमक, यव क्षार, हल्दी, दारूहल्दी, मोथा, देवदारू, कूठ 25–25 ग्राम कूट पीसकर प्रयोग करें।

चर्म रोगारि तैल– महामरिच्यादि तैल 100 ग्राम, करंज तैल, नीम–तैल, तुवरक तैल 25–25 ग्राम सबको मिला प्रयोग कर (सभी तैल बाजार में/पंसारी के यहां आसानी से मिल जाते हैं)

पथ्य– उपरोक्त औषधि व्यवस्था के साथ, नमक, मिर्च, खटाई, साबुन का प्रयोग निषेध है। गेहूँ में 25 या 50 प्रतिशत चना मिलाकर खाना खावे।

विशेषः– विशेष लाभ के लिए प्रतिदिन स्नान के बाद एलोवेरा गूदा को शरीर पर मालिश कर सूख जाने दें, जो अगले दिन स्नान तक शरीर पर लगा रहे।

थक हारकर आना बुजुर्गो की राह पर

मिट्टी के बर्तनों से स्टील और प्लास्टिक के बर्तनों तक और फिर कैंसर के खौफ से दोबारा मिट्टी के बर्तनों तक आ जाना।

ज्यादा मशक्कत वाली जिंदगी से घबराकर पढ़ना लिखना और फिर IIM MBA करके आर्गेनिक खेती पर पसीने बहाना।

कुदरती से प्रोसेस फूड पर और फिर बीमारियों से बचने के लिए दोबारा कुदरती खानों पर आ जाना

इम्तहान

– पं0 रघुवीर सहाय शर्मा "मैथिलेन्दु"

हे प्रभो! इस दास की इतनी विनय सुन लीजिये।
मार थप्पड़, लात घूंसा पास ही कर दीजिये।।1।।

मैं नहीं डरता प्रलय से मौत से तूफान से ।
काँपती है रूह मेरी बस सदाँ इम्तहान से।।2।।

रात को मच्छर का कहरा रोज मेरे कान में।
होस करके बैठना, अबके जरा इम्तहान में।।3।।

आ गया हूँ शरण तेरी इस जिन्दगी से हारकर।
कापी में रख नोट सौ का पर मुझे तू पासकर।।4।।

पी गई इंगलिश हमारी खोपड़ी के खून को।
मैं समझ पाया नहीं इस बेतुके मजबून को।।5।।

राम रामौ राम रामौ हाय प्यारी संस्कृतम्।
मर गया मैं, तुम न आई–गच्छ गच्छ कचूमम्।।6।।

बाबर हुमायूँ और अकबर शाहजहाँ भी आये थे।
कौन किसके पुत्र थे और कौन किसके बाप थे।।7।।

अक्ल एजलेब्रा गया जड़ से हमारी पचा।
तीन में से चार गये और क्या बाकी बचा।।8।।

भूगोल में एक प्रश्न आया गोल है कैसे धरा।
एक पल में लिख दिया मैंने ये उत्तर खरा।।9।।

गोल पूरी और कचौड़ी– गोल पापड़ गोल है।
इसलिये मैडम हमारी– ये धरा भी गोल है।।10।।

झूम उठी मैडम हमारे इस अनोखे ज्ञान से।
कॉपी पर झट लिख दिया उन्होंने बड़ी शान से।।11।।

ठीक है बेटा तुम्हारी खोपड़ी भी गोल है
गोल है पैन मेरा–नम्बर तुम्हारा गोल है।।12।।

हे प्रभो इस भाग्य में– ऐसा लिखा क्या पाप है।
रात को रहता सुबह मैदान मिलता साफ है।।13।।

भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री पं0 अटल बिहारी वाजपेयी का जन्मदिन मैथिल ब्राह्मण महासभा उ0प्र0 ने अपने कार्यालय सुरेन्द्र नगर अलीगढ़ पर संस्थापक पं0 जयप्रकाश शर्मा, प्रदेश अध्यक्ष महेन्द्र पाल शास्त्री व महामंत्री विजय प्रकाश शर्मा ने माल्यार्पण कर बहुत ही धूमधाम से मनाया। कार्यक्रम में पूरन चन्द्र शास्त्री, अनुराग पाराशर, ललित मोहन शर्मा, हीरालाल शर्मा, शेष शर्मा, ममता शांण्डिल्य, मदन मिश्रा, नवनीत शर्मा आदि उपस्थित रहे।

आँवले का अचार

– **श्रीमती चन्द्रकान्ता शर्मा**, अलीगढ

अचार बनाने के दौरान सावधानियाँ–

1– लोहे, ताँबे तथा पीतल के बरतनों में कभी भी अचार नहीं बनाना चाहिए।

2– नमक, सिरका, तेल तथा अम्ल हमेशा बतायी गयी मात्रा में ही डालना चाहिए।

3– अचार के बर्तन का ढक्कन हमेशा कसकर लगाना चाहिए ताकि हवा नहीं लग सके। धूप हमेशा दिखाते रहना चाहिए।

4– अचार निकालते समय हमेशा सूखा हाथ अथवा चम्मच डालिए। गीला हाथ डालने से अचार में नमी प्रवेश कर जाने से फफूँदी लग जाती है।

5– अचार बनाने के लिए हमेशा ताजे फल अथवा सब्जी प्रयोग में लाना चाहिए।

6– अचार में प्रायः एक परत सफेदी परत जम जाती है। ऐसी अवस्था में इसे हटाकर इसमें एक प्रतिशत एसिटिक एसिड डाल देना चाहिए।

7– कभी–कभी अचार का रंग काला पड़ने लगता है। यदि सेंधा नमक तथा फूल सहित लौंग का प्रयोग किया जाय तो ऐसा विकार उत्पन्न हो जाता है।

8– अचार को शुष्क तथा ठण्डे भण्डार में रखना चाहिए। नम तथा ऊँचे तापमान वाले भण्डार में रखने से इनमें फफूँदी लग जाती है तथा इनका रंग खराब हो जाता है।भी अचार का रंग काला पड़ने लगता है। यदि सेंधा नमक तथा फूल सहित लौंग का प्रयोग किया जाय तो ऐसा विकार उत्पन्न हो जाता है।

9– अचार को शुष्क तथा ठण्डे भण्डार में रखना चाहिए। नम तथा ऊँचे तापमान वाले भण्डार मे रखने से इनमें फफूँदी लग जाती है तथा इनका रंग खराब हो जाता है।

आँवला	2 किलो	काली मिर्च	20 ग्राम
नमक	300 ग्राम	प्याज	60 ग्राम
हल्दी	40 ग्राम	लहसुन	10 ग्राम
लाल मिर्च	50 ग्राम	अदरक	60 ग्राम
सौंफ	25 ग्राम	नींबू रस	250 मिली0
जीरा	30 ग्राम	सरसों तेल	1 लीटर

बनाने की विधि–

ताजा तथा स्वच्छ आंवले लेकर धो लीजिए। इन्हें उबलते हुए पानी में 10–15 मिनट डालकर मुलायम कर लें तथा फांके अलग–अलग कर गुठली फेंक दें। एक स्टील/एल्यूमिनियम के भगोने में थोड़ा सा तैल लेकर गर्म करें। पश्चात कटे हुये प्याज, लहसुन अदरक को भूरा होने तक भूनें, अन्य पिसे हुए मसालें मिलाकर आँवले की फाँके भी इसमें मिला दें तथा इस मिश्रण को अच्छी तरह मिला लीजिए। अब इसे एक सूखे जार में रखकर ऊपर से नींबू का रस तथा तैल डाल दें। एक सप्ताह बाद अचार खाने के लिए तैयार है। आंवले का अचार, गर्मियों में उल्टी, जी मिचलाना व पित्त विकारों में बहुत उपयोगी है।

स्वास्थ्य प्रश्नोत्तरी

प्रश्नः आदरणीय बन्धुवर, मैं अपनी समस्या के समाधान हेतु 2 बार पत्र लिख चुका हूँ। तीसरी बार पुनः पत्र लिख रहा हूँ, कृपया शीघ्र समाधान भेजे, मैं बहुत परेशान हूँ। बन्धुवर मैं 30 वर्षीय अध्यापक हूँ, मैं 2 वर्ष से पेप्टिक अल्सर से पीड़ित हूँ, इससे पूर्व मैं कई वर्षों तक अम्ल पित्त रोग से पीड़ित था। 2 वर्ष पूर्व मेरे पेट में तीव्र दर्द उठा और हॉस्पीटल में भर्ती कराया गया। जांच हुयी 3 दिन हॉस्पीटल में रहा, ठीक हो गया। और घर आ गया। परन्तु 3 माह पूर्व पहले जैसा पेट में दर्द पुनः हो गया। दर्द के साथ उल्टियां भी हुयी, कुछ खाने का मन नहीं करता, वैसे खाना लेने से कुछ आराम सा लगता है, पेट में गले में आग सी जलती रहती है, थोड़ी–थोड़ी देर में पानी पीना पड़ता है, मेरे एक मित्र हैं, उनके यहां पत्रिका से मैंने आपका पता लिया है। कृपया शीघ्र ही कोई समाधान करें।

– के0एल0 अवस्थी, छोटी होली, खुर्जा (बुलन्दशहर)

समाधानः अवस्थी जी आपके दोनों पत्र हमें मिले थे, वह हमारी फाईल में सुरक्षित हैं, हमारी मजबूरी है। पत्रिका में पृष्ठों की संख्या कम होने के कारण एक माह में एक ही प्रश्न का उत्तर भेज पाते हैं। नियमानुसार आपको समाधान भेजने का समय फरवरी माह था। लेकिन आतुरता व आपके रोग की तीव्रता को देखते हुये क्रम भंग कर जनवरी माह में ही समाधान भेज रहे हैं। आपने अपने रोग विवरण के साथ जो एण्डोस्कापी की रिपोर्ट भेजी है, उससे स्पष्ट है कि आप आमाशय व्रण से पीड़ित हैं, आपके रोग लक्षणों के अनुसार आप आमाशय व्रण के रोगी हैं। अम्ल पित्त रोग जीर्ण होने पर आमाशय व्रण (पेप्टिक अल्सर) का रूप धारण कर लेता है, आमाशय में एकत्रित अम्ल (हाइड्रोक्लोरिक एसिड) जब ज्यादा बढ़ जाता है, तब यह अम्ल आमाशय की श्लैष्मिक झिल्ली के नाजुक ऊतकों को काटकर वहाँ छाला पैदा कर देते हैं। कभी–कभी यह छाला गहरा और गम्भीर हो जाता है, तब पेट में भयंकर दर्द व उल्टी होती है।

रोग कारणः जो कारण अम्ल पित्त उत्पन्न करते हैं, वही कारण आमाशय व्रण के होते हैं। मिर्च, मसाले, खटाई, चाय, काफी, तला हुआ खाना, समय पर भोजन न करना आदि कारण इस रोग के कारण हैं। यह एक जटिल साध्य रोग है।

आमाशय व्रण की चिकित्साः इस रोग की चिकित्सा में आहार–विहार का विशेष महत्व है अतः अवस्थी जी आप यह स्पष्ट जान लें कि आपको कम से कम 3 माह चिकित्सा करनी होगी और एक वष पथ्य पर रहना होगा।

जहरमोहरा पिष्टी	20 ग्राम
आमल की रसायन	20 ग्राम
कामदुधा रस	20 ग्राम
नारिकेल लवण	20 ग्राम
कपर्द भस्म	10 ग्राम
सूत शेखर रस (स्वर्ण रहित)	10 ग्राम
60 पुड़िया बनाकर प्रातः सांय लें	

अम्लपित्तान्तक चूर्ण–कपूर कचरी (20 ग्राम), सौंफ (10 ग्राम), आंवला (10 ग्राम), धनीया (10 ग्राम), कमलगट्टा की मींग (10 ग्राम), श्वेत चन्दन (10 ग्राम), छोटी इलायची (10 ग्राम), सज्जी क्षार (10 ग्राम) सबको मिला पीसकर आधा चम्मच सुबह शाम अर्क सौंफ के साथ लें।

शुक्तिन टैबलेट 2–2 गोली (अलारसिन कम्पनी की) सुबह–शाम पानी से लें।

पथ्य व्यवस्थाः 3 माह तक निम्न पथ्य पर रहना चाहिए। प्रातः चाय का प्रयोग एकदम बन्द कर दें। शौच के बाद 1 कप ठण्डे दूध के साथ 2 बिस्कुट ग्लूकोज भी दें। प्रातः नास्ते में कूष्मान्डावलेय या गुलकन्द दें 2–2 चम्मच। खाना बन्द कर गेहूँ का दलिया मूंग दाल डालकर पतला–पतला दें। साथ में लौकी, तोरई पत्ता गोभी, गाजर उबालकर हल्का नमक मिलाकर दें, रोटी बन्द करने का तात्पर्य यह है कि आमाशय को ज्यादा से ज्यादा आराम मिले और वहाँ पित्तवर्धक आहार न पहुंचे, जिससे आमाशय व्रण का रोपण शीघ्र हो सके।

मैथिल ब्राह्मण सन्देश वार्षिक सदस्य

अलीगढ़ महानगर

1– **श्री चिरंजी लाल शर्मा,** होडिल नगर,फेस–1,महावीर नगर अलीगढ।		9411801258
2– **श्री रामबाबू शर्मा,** धर्मपुरी, विकास नगर, अलीगढ़।		
3– **श्री प्रभाकर शर्मा,** कुंवर नगर, अलीगढ़।		8958073458
4– **श्री शिवचरनलाल शर्मा,** कुंवर नगर, अलीगढ़।		9311216220
5– **श्री बंटी शर्मा,** माली नगला, अलीगढ़।	द्वारा–विक्रम पाण्डेय, अलीगढ़	5759978512
6– **श्री संदीप कुमार भारद्वाज,** गंगानगर, सिंधौली, अलीगढ़।		9927947028
7– **श्री वेदप्रकाश शर्मा,** कुंवर नगर, आम वाली गली, अलीगढ़।		9259361290
8– **श्री सोनू शर्मा,** कुंवर नगर, आम वाली गली, अलीगढ़।		7351438318
9– **श्री वीरेन्द्र कुमार शर्मा,** विकास नगर, अलीगढ़।		9897717620
10–**श्री विशाल पाण्डेय,** माली नगला,, अलीगढ़।		7417302188

1– **श्री अशोक कुमार शर्मा,** सांईवाटिका, रमेश बिहार के सामने, अलीगढ़		8439173721
2– **श्री डोरीलाल शर्मा,** गली पर्वतराज, अलीगढ़।	द्वारा–राजकुमार शर्मा, अलीगढ़	9720323466
3– **श्री मनमोहन शर्मा,** गली पर्वतराज, अलीगढ़		9219610599

संरक्षक रघुवीर सहाय शर्मा की सूचना के आधार पर

मैथिल ब्राह्मण सन्देश पत्रिका आगरा में प्रतिमाह प्रत्येक मैथिल ब्राह्मण परिवार तक पहुंचे, इस हेतु एक वृहद योजना बनाई जा रही है। प्रारम्भ में आगरा महानगर को दो भागों में बांटकर 1.पूर्वी आगरा महानगर व 2.पश्चिमी आगरा महानगर बनाया है, जिनमें क्रमशः पं0 राजेन्द्र पाल शास्त्री व श्री मुकेश कुमार शर्मा को संयोजक बनाया गया है और इन्हें अधिकार दिए गए हैं कि यह अपने सहयोग हेतु 10–10 खण्ड बनाकर उनके खण्ड प्रमुख तय करे। प्रत्येक खण्ड प्रमुख को प्रारम्भ में 5 पत्रिका वितरण का कार्य सौंपा जाय। आपसे अपेक्षा की गई है कि यथाशीघ्र खण्ड प्रमुखों के नाम उनका क्षेत्र तय कर पत्रिका कार्यालय में प्रकाशन की सूची मोबाईल नम्बर सहित शीघ्र भिजवाएं।

मथुरावासी डॉ0 ताराचन्द्र शर्मा, पूर्व प्राचार्य का वरिष्ठ साहित्यकार के रूप में सम्मान करते हुये। **विस्तार से समाचार के लिए पढ़ें– दिसम्बर माह की पत्रिका का अंक**

मैथिल ब्राह्मण सन्देश पत्रिका वितरण अधिकारी

अलीगढ़ महानगर वितरण अधिकारी- श्री विजय प्रकाश शर्मा, मोः 9058841900

क्रमांक	नाम पत्रिका वितरक	मोबाईल	सम्बन्धित मौहल्ले
1.	श्री सुरेन्द्र पाल शर्मा	9837690850	संजय गांधी कॉलोनी
2.	श्री प्रवेश कुमार शर्मा	9897671421	आंशिक रावण टीला
3.	श्री पं0 महेश चन्द्र झा	9897686401	मिथिलापुरी, देवी नगला, नगला डालचन्द्र
4.	श्री रविनन्दन शर्मा (बाबू)	9457006045	डालचन्द नगला, सरोज नगर
5.	आचार्य पूरन चन्द्र शास्त्री	9412442343	सरोज नगर,प्रेम नगर, प्रभात नगर, बघेल नगर
6.	श्री विनोद शर्मा	9412819228	बाबा कॉलोनी और आगे तक
7.	श्री महेश चन्द्र शर्मा	9258427346	कुंवर नगर कॉलोनी
8.	श्री विक्रम पाण्डेय	7417302188	माली नगला, कुंवर नगर, बाबा कॉलोनी आदि
9.	श्री डा0 देवेन्द्र कुमार शर्मा	9219129457	डोरी नगर, कुन्दन नगर, राठी नगर आदि
10.	श्री जगदीश प्रसाद शर्मा	8923124025	विकास नगर
11.	श्री देवेन्द्र कुमार	8191863126	वेद नगर, महावीर नगर आंशिक
12.	श्री बसन्त कुमार शर्मा एड0	9897334374	शास्त्री नगर
13.	श्री भूपेश कुमार शर्मा	9258862183	आंशिक बेगम बाग, साकेत कॉलोनी
14.	श्री देवकीनन्दन पाठक	9458408006	बेगम बाग, ज्योति नगर, सुदामापुरी आदि
15.	श्री ललित कुमार शर्मा	9568309860	टीकाराम कॉलोनी आदि
16.	श्री (पं0) मुकेश कुमार भारद्वाज	8410158237	खैर रोड, देहली गेट, शिवपुरी, न0 मसानी
17.	श्री शेष कुमार शर्मा	8923743302	गांधी नगर, महेन्द्र नगर, बापू नगर
18.	श्री विजय प्रकाश शर्मा	9058841900	पला , भगवान नगर, कृष्णा बिहार आदि
19.	श्री राजकुमार शर्मा	9528925156	कृष्णापुरी, हरीनगर, गोपालपुरी
20.	श्री राजकुमार शर्मा (डिब्बा वाले)	8449595091	कृष्ण बिहार, बिहारी नगर, बैंक कॉलोनी
21.	श्री नवनीत शर्मा	9219205356	पला साहिबाबाद अलीगढ
22.	श्री के0एस0 शर्मा	8630285841	जनपद–मथुरा
23.	श्री उपेन्द्र झा ''मैथिल''	9837484645	जनपद–हाथरस
24.	श्री पी0के0 शर्मा	9350802307	अशोक नगर, शाहदरा दिल्ली
25.	श्री रमेश चन्द्र शर्मा	9312942251	दिल्ली
26.	श्री किशोर मिश्रा	9811563927	अध्यापक नगर, दिल्ली
27.	श्री यादराम शर्मा ''शांण्डिल्य''	9910108907	फरीदाबाद
28.	श्री राजेन्द्र पाल शास्त्री	9760746099	आगरा पूर्वी
29.	श्री मुकेश कुमार शर्मा		आगरा पश्चिमी
30.	श्री कोमल प्रसाद	9719247433	अवागढ़ जनपद– एटा
31.	श्री हरीशकंर मिश्रा	9927383141	फिरोजाबाद
32.	श्री अशर्फी लाल शर्मा	6396959575	अवागढ़ जनपद– एटा

वर-कन्या सूची

1. कु0 चेतना (मांगलिक) पुत्री श्री चन्द्रपाल शर्मा, जन्मतिथिः 06.07.1991, शिक्षाः एम0ए0 (समाज शास्त्र), कद–5'3'', खेडा–सुसानिया ननसार खेडा–राजौरिया, अलीगढ। सम्पर्क मोः 8410158237
2. जतिन कुमार झा पुत्र श्री अशोक कुमार शर्मा, जन्मतिथिः08.08.92, शिक्षाः 12+डिप्लोमा, कद–6', खेड़ा–अरोठिया, जॉब–रिफाइनरी मथुरा, पता–पला रोड होली चौक, अलीगढ़। मोः 7500194365
3. टेकचन्द्र शर्मा पुत्र श्री गोपाल शर्मा, जन्मः 1991, शिक्षाः बी0ए0, कद–5'6'', खेडा–वसुधरिया सेईवार, पता–बुद्धविहार फेस–2, श्याम नगर, गली नं. 16 दिल्ली। मोः 9350348621
4. सत्यपाल शर्मा पुत्र श्री ज्ञानसिंह शर्मा, जन्मः 1988, शिक्षाः एम0ए0, कद–5'6'', पता– गूंगीमाता मन्दिर, गली नं. 2, बापूनगर,बैंक कॉलोनी, अलीगढ़। मोः 8923749983
5. राजेश शर्मा पुत्र श्री राकेश शर्मा, जन्मः 1990 शिक्षाः 12, कद–5'6'', खेडा–महवनिया वरमानिया, पता–कमालपुर रोड, कुंवर नगर, अलीगढ। मोः 9639812688
6. कु0 पूनम शर्मा, जन्मः12.06.1983 शिक्षाः एम0ए0 बी0एड0, पी0एच0डी0, कद–5'3'', मेरठ। मोः 9453766922
7. कु0 रीना शर्मा पुत्र स्व0 राधेश्याम शर्मा, जन्मः21.06.1988 शिक्षाः एम0ए0 बी0एड0, कद–5'2'',खेडा–अरोठियावार वरमानिया, पता–डिप्टीगंज, नौरंगाबाद, अलीगढ। मोः 8126393056
8. अरविन्द कुमार शर्मा पुत्र श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा, जन्मतिथिः02.08.1980, शिक्षाः एम0ए0 पी0एच0डी0,कदः 5'6'', खेडा–अरोठिया महावनिया, पता–सुरेन्द्र नगर, अलीगढ़। मोः 7417630932
9. शालिनी मिश्रा पुत्री स्व0 श्री एमपी शर्मा, जन्मतिथिः 13.06.1985, शिक्षाः एमए, कदः 5'2'', पता– मथुरा। मोः 9412279903
10. मोहनलाल शर्मा पुत्र श्री अशोक कुमार शर्मा, जन्मतिथिः 1994, शिक्षाः 12 कद–5'6'', खेडा–कचनाडय, अकोशिया, पता–कुंवर नगर, गली नं. 3, अलीगढ। मोः 8273329003
11. वरूण शर्मा पुत्र श्री रामप्रकाश शर्मा, जन्मतिथिः 18.04.1999, शिक्षाःबी0टैक डिप्लोमा, कद–5'8'', जॉब–मारूति सुजुकी, खेड़ा–हिन्डोलिया, बरौलिया, पता– घनश्यामपुरी, अलीगढ (उ0प्र0)। मोः 9634034053
12. बांकेलाल शर्मा पुत्र श्री निरंजन लाल शर्मा, जन्मतिथिः 13.10.95 शिक्षाः बी0एस0सी0 बी0टैक, कद–5'8'', खेडा– विलाईवार, विसावली बार, पता– बेगम बाग, अलीगढ। मोः 9259384155
13. अविनेश कुमार शर्मा पुत्र स्व0 सरवेश शर्मा, जन्मतिथिः07.05.1986, शिक्षाः बीकॉम हार्डवेयर, कदः 5'6'', खेडा– कचनाडय, बरमानियां, पता– बेगम बाग, हनुमान मन्दिर के पास, अलीगढ। मोः 9690400646
14. संचित पुत्र डा0 उमेश चन्द्र शर्मा, जन्मतिथिः30.07.1991, शिक्षाः बी0टैक (मैकेनिकल), एमबीए (एलएससीएम), जॉब असिस्टैंट मैनेजर इन फ्यूचर सप्लाई चैन, कदः 6', खेडा– खास लोहवन, ननसार जलेसरिया, पता–ए–103,ग्रीन पार्क अपार्टमैंट, अलीगढ। मोः 8218741141, 9410200425
15. सपना झा पुत्री श्री तिलकचन्द्र झा, जन्मतिथिः 09.07.1986, शिक्षाः बी0ए0, जॉबः मैडीकल कॅलेज, कदः 5'4'' पता–जबलपुर। मोः 7489308074
16. राहुल शर्मा पुत्र श्री पी0सी0 शर्मा, जन्मतिथिः 01.10.1990, शिक्षाः बी0ए0 +आईटीआई, गोत्र–भारद्वाज, जॉबः पोशाक व्यवसाय, कदः 5'5'', पता–मकान नं. 1, एसकुमार, स्कूल में, माहौर नगर, आगरा। मोः 9411997989
17. विवेक शर्मा पुत्र श्री कुलदीप चन्द्र शर्मा, जन्मतिथिः 11.08.1990, शिक्षाः एमकॉम, जॉबः उद्यान विभाग में संविदा पर, कदः 5'3'', पता–नामनेर, आगरा। मोः 7983609942
18. गुलशन झा पुत्र श्री कुलदीप झा, जन्मतिथिः 10.09.1992, शिक्षाः एमकॉम, गोत्र–भारद्वाज, जॉबः पारिवारिक प्रतिष्ठान, कदः 5'6'', पता–झांसी। मोः 9415230975
19. अजीत कुमार शर्मा पुत्र श्री उमाशंकर शर्मा, जन्मतिथिः 23.09.1990, शिक्षाः बीकॉम, खेडा–चिरौईया, जॉबः एचडीएफसी बैंक, कदः 5'8'', पता–मुम्बई। मोः
20. मनीष कुमार झा पुत्र श्री राजकुमार झा, जन्मतिथिः 08.07.1988, शिक्षाः हाईस्कूल, जॉबः प्राईवेट कम्पनी में जॉब, पता–ग्वालियर (म0प्र0)। मो 9993478962

21. विवेक वत्स पुत्र श्री चन्द्रप्रकाश शर्मा, जन्मतिथिः 08.11.1987, शिक्षाः बीकॉम, जॉबः क्लर्क उपकार प्रकाशन, कदः 5'8'' आगरा पताः–आगरा। मोः 7310747520
22. गीत शर्मा (मांगलिक) पुत्र श्री सुनील कुमार शर्मा, जन्मतिथिः 09.05.1988, गोत्र–वशिष्ठ, शिक्षाः बीए, जॉबः वीवो मोबाईल, कदः 5'8'', पताः जयपुर। मोः 9521799290
23. अनुराग मिश्रा पुत्र श्री पी0के0 मिश्रा, जन्मतिथिः 26.07.1993, शिक्षाः एमबीए, गोत्र–शांडिल्य, जॉबः टाटा मोटर्स, कदः 5'6'' पताः दिल्ली। मोः 8791505041
24. मोहिनी वशिष्ठ पुत्री श्री नत्थूलाल शर्मा, जन्मतिथिः 04.08.1995, शिक्षाः एमए, गोत्र–वशिष्ठ, कदः 5'3'', पताः बदायूं। मोः 7983860047
25. डिम्पल शर्मा पुत्री श्री सन्तोष कुमार शर्मा, जन्मतिथिः 24.11.1994, शिक्षाः एमकॉम बीएड, जॉब– टीचिंग, कदः 5'3'' पता– अजमेर। मोः 9828638519
26. दीक्षा शर्मा पुत्री श्री नवीन कुमार शर्मा, जन्मतिथिः 04.12.1992, शिक्षाः बीटैक, जॉबः इलै0इंजीनियर दिल्ली मेट्रो, कदः 5'3'', पता– आगरा। मोः 7983502355
27. मोहित शर्मा पुत्र श्री संतोष कुमार शर्मा, जन्मतिथिः 05.02.1988, शिक्षाः एमएससी, जॉबः अध्यापन कार्य, पता–बीकानेर। मोः 7725912222
28. आदित्य शर्मा पुत्र श्री राजेश शर्मा, जन्मतिथिः 21.03.1993, शिक्षाः बीटैक, जॉबः बिजनीसमैन, पता–मैनपुरी। मोः 9412186488
29. दीपक शर्मा पुत्र श्री जैनेन्द्र कुमार शर्मा, जन्मतिथिः 15.10.1989, शिक्षाः बीए, जॉबः बिजनीस, पता–ज्वालापुरी, अलीगढ। मोः 9720273027
30. रवि शर्मा पुत्र श्री रामप्रकाश शर्मा, जन्मतिथिः 12.04.1996, शिक्षाः हाईस्कूल, जॉबः हार्डवर्क ठेकेदार, पता– आगरा। मोः 7747958410
31. हितेश कुमार शर्मा पुत्र श्री रूपकुमार शर्मा, जन्मतिथिः 04.10.1988, शिक्षाः बीकॉम, जॉबः जेके टायर्स, पता– गुजरात। मोः 9737540448
32. दीक्षा शर्मा पुत्री श्री रामकिशोर भगवानदास शर्मा, जन्मतिथिः 16.04.1996, शिक्षाः हाईस्कूल, पता– गुजरात। मोः 9624538238
33. अमित कुमार शर्मा पुत्र श्री एमपी शर्मा, जन्मतिथिः 09.08.1986, शिक्षाः बीटैक, जॉबः सर्विस, पता–आगरा। मोः 9624388044
34. कृतिका शर्मा पुत्र श्री गोपाल शर्मा, जन्मतिथिः 09.05.1986, शिक्षाः पोस्ट ग्रेजुएट, जॉबः प्राईवेट स्कूल में अध्यापन कार्य पता– अजमेर। मोः 9828282864
35. विशेष मोहन शर्मा पुत्र श्री ललित मोहन शर्मा, जन्मतिथिः 13.12.1992, शिक्षाः एमएससी, जॉबः एसएससी द्वारा टैक्स असिस्टैंट, पता–आगरा। मोः 7520053395
36. अंकित शर्मा पुत्र श्री गिरीश चन्द्र शर्मा, जन्मतिथिः 26.02.1991, शिक्षाः एमटैक, जॉबः असिस्टैंट प्रोफेसर, कदः 5'3'' पता– बरेली। मोः 9411205030
37. गरिमा शर्मा पुत्री श्री गिरीश चन्द्र शर्मा, जन्मतिथिः 02.02.1988 शिक्षाः बीटैक, जॉबः जू0इं0, कदः 5'3'', पता–आगरा। मोः 9411205030
38. सुमित कुमार शर्मा पुत्र श्री बलवीर शर्मा, जन्मतिथिः 16.04.1991, शिक्षाः बीटैक, जॉबः असिस्टैट मैनेजर, कदः 5'8'', पता–हाथरस। मोः 8057551144
39. मोहिनी शर्मा पुत्री श्री नेत्रपाल शर्मा, जन्मतिथिः 13.09.1996, शिक्षाः एमकॉम, कदः 5'3'', पता–पला रोड अलीगढ। मोः 9412370841
40. राहुल मैथिल पुत्र श्री राजू मैथिल, जन्मतिथिः 05.02.1995, शिक्षाः बीकॉम, कदः 5'4'', जॉबः एमपी ऑनलाईन शाप, पता– राईसन मध्य प्रदेश। मोः 9179219451

विवाह विवरण फॉर्म

प्रबन्ध सम्पादक जी
मैथिल ब्राह्मण सन्देश

प्रिय महोदय,

निम्नलिखित विवाह विवरण 'मैथिल ब्राह्मण सन्देश' में प्रकाशित करने की कृपा करें।

1.प्रत्याशी युवक/युवती का नाम.....

2.आयु.....वर्ष, जन्मतिथि (अंकों में).....शिक्षा.....

जन्म समय.....जन्मस्थान.....

3.रंग.....कद.....वजन.....

4.प्रत्याशी के व्यवसाय का विवरण, व्यापार/नौकरी.....

मासिक आय रू. (अनुमानत).....

5.ऋषि गोत्र (स्वयं).....(ननसार का).....

6.खेडा (स्वयं).....(ननसार का).....

7.पिता का पूरा नाम श्री.....व्यवसाय.....

8.स्थाई पता.....मोबाईल नं.....

9.प्रत्याशी (स्वयं को छोड़कर) कितने भाई...../बहन.....

मैं प्रमाणित करता हूँ कि उपरोक्त विवरण सही है, कोई तथ्य छिपाया नहीं गया है तथा उपरोक्त प्रत्याशी बालिग एवं अविवाहित है, उसका सम्बन्ध अभी तय नहीं हुआ है।

दिनांक.....

हस्ताक्षर पिता/माता/संरक्षक

नियमः–

1. मैथिल ब्राह्मण सन्देश में विवाह योग्य/युवक/युवतियों के विवरण ग्राहकों के वर्ष में तीन बार निःशुल्क प्रकाशित किये जायेंगे। अतिरिक्त विवरण प्रकाशित कराने के लिए 50 रू0 प्रति बार देना होगा।
2. पत्रिका सदस्यों के अतिरिक्त व्यक्ति के विज्ञापन प्रकाशन शुल्क प्रतिवार 50 रू0 देय हैं, साफ भरा हुआ विवरण ही प्रकाशित किया जायेगा।
3. पत्रिका में विवाह योग्य युवक/युवतियों का विवरण निःशुल्क प्रकाशन हेतु पत्रिका का सदस्य होना अनिवार्य है।
4. फार्म पूर्ण भरकर व्हॉटसअप अथवा ई–मेल पर भेजें अथवा क्षेत्रीय प्रतिनिधि को दें।

Whatsapp: 9259647216 (मैथिल ब्राह्मण संदेश ग्रुप),email:mbmaligarh2019@gmail.com

C.P. Bhardwaj
09760013825
07017565606

HARIOM ENTERPRISES™

Param Prakash Bhardwaj
07300779612

HARIOM ENTERPRISES

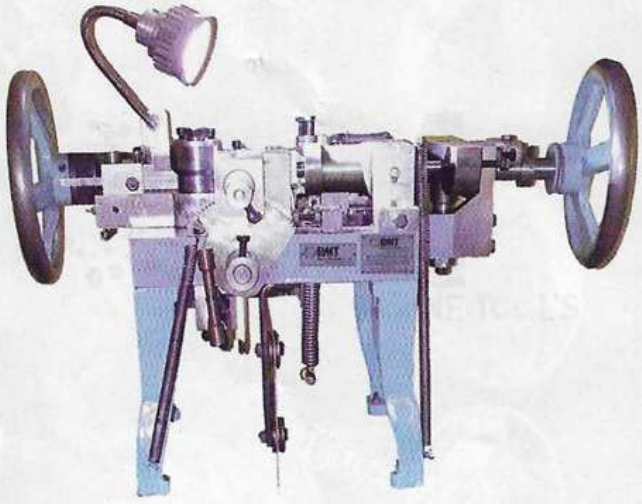

Manufacturer & Exporter :

ALL TYPES OF JEWELLERY MACHINES
& TOOLING

Off. : Maharera House, Hathras Road, Naraich, Agra - 282006

E-mail : hariomenterprisesagra@gmail.com website : indianjewellerymachines.com

Fact. : Opp. Maya Devi Cold Store, Unit No. 2, Ujarai, Hathras Road, Agra-282006

ESDI

Lalit Sharma
093599 02054

Yogendra Kumar
093599 02055

Satya Prakash
092196 36927
095482 46257

SDSKTC-500 (5HP)

S.D. INDUSTRIES™

Mfrs. & Suppliers of : All Kinds of Air Compressor & It's Spare Parts etc.

VIDHYAPURAM, FOUNDRY NAGAR, AGRA-282006

Ph. : 0562-4309359

Email : satya.ew@gmail.com

Vinayaka
INTERNATIONAL CONVENT SCHOOL

रामबाबू शर्मा
सचिव/ प्रबन्धक (सोसायटी)

Play Group to Class 8th

मनोज शर्मा
Director (V.C.E.M.)

- Well trained highly qualified and experienced teaching staff.
- CCTV cameras are available in the school campus for security of students.
- Transport facility is available for all routes.
- Yoga / Dance / Music & Other activities Classes.
- Providing Basic Computer Knowledge.
- Spacious Building with adequate Play Ground .
- Generator / RO water facility.
- Spacious & Fully play way methods.
- Swimming Pool / Play Zone Facility.
- A school without need of tutions.
- Well furnished & colour full class rooms.

ADMISSION OPEN

Contact No. : 8979695988, 6399990040

Surendra Nagar Pani Ki Tanki Road, Surya Vihar, Etah-Qwarsi Bypass, Aligarh

VINAYAKA'S COLLEGES
VCEM
Group For Quality Education
OF ENGINEERING & MANAGEMENT

प्रवेश प्रारम्भ

पॉलीटैक्निक

सीधे प्रवेश योग्यता 10वीं पास **डिप्लोमा इंजी**

नोट : 12th (P.C.M.) या I.T.I. पास विद्यार्थी सीधे पॉलीटैक्निक द्वितीय वर्ष में प्रवेश लें

ट्रेड
इलैक्ट्रोनिक्स | मैकेनेनिकल | आई.टी.
इलैक्ट्रीकल | कम्प्यूटर साइंस | सिविल

100% Placement

Mob. : 9837733337

कैम्पस : निकट नौरंगाबाद पैट्रोल पम्प, प्रद्युम्न विहार, संजय गाँधी कालौनी, जी.टी. रोड, अलीगढ़